रुपये 10

सेवा समर्पण

वर्ष-39, अंक-12, कुल पृष्ठ-36, भाद्रपद-आश्विन, विक्रम सम्वत् 2079, सितम्बर, 2022

'सुयश' के कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सरसंघचालक डॉ. मोहनराव भागवत ने कहा, "सेवा का कार्य ईश्वर का कार्य है, इस भाव से जब हम सेवा कार्य करते हैं तो सभी कार्य स्वयं पूर्ण होने लगते हैं।"

सामूहिक जन्म दिवस

माता जीवनीबाई केन्द्र, ब्रह्मपुरी जिले में उन्हीं छात्र, छात्राओं एवं शिक्षिकाओं का जन्मदिन सामूहिक रूप में मनाया गया जिनका जन्म अगस्त मास में आता है। कार्यक्रम रक्षाबंधन तथा जन्माष्टमी का भी सम्मिलित आयोजन था। स्वतंत्रता दिवस की भी झलक इसमें दिाई पड़ी। मंच संचालिका श्री मती रमा जी ने प्रमु अतिथियों को आसीन करने के पश्चात् पंडित जी से हवन-पूजन शुरू करने का आग्रह किया। यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् सभा की अध्यक्षता कर रहे आचार्य मायाराम पतंग जी ने उन सभी बारह छात्र छात्राओं को आशीर्वाद दिया जिनका अगस्त में जन्मदिन है। चित्र कला में विजयी घोषित तीन बच्चों को पुरस्कृत करने के बाद आचार्य मायाराम पतंग जी ने रक्षाबंधन के महत्व एवं इतिहास की जानकारी दी। उन्होंने यह भी विस्तार से बताया कि हमें केक काटने और मोमबत्ती बुझाने की विदेशी रीति नहीं अपनानी चाहिए। भारतीय संस्कृति के अनुसार यज्ञ करना तथा दान देने की परम्परा को कायम रना चाहिए। इसके पश्चात् उन्होंने दान पात्र में श्रद्धा अनुसार समर्पण किया। इस शुभ अवसर पर उस क्षेत्र के ऐसे कर्मठ, सेवा भावी कार्यकर्ताओं को भी सम्मानित किया गया जिनके द्वारा कोविड काल में भी क्षेत्र में भरपूर सेवा की गई थी। अन्त में कल्याण मंत्र के बाद सभी को शिक्षिका बहनों ने रक्षासूत्र बांधा। फिर भोजन के लिए सभी को पंक्तियों में बिठाया गया। सबके पास भोजन पहुंच जाने पर श्रीमान वीरेंद्र माटाजी ने भोजन मंत्र का पाठ करवाया। सभी ने प्रेम से भोजन किया। श्री जगदीश जी ने सभी को उपस्थिति के लिए धन्यवाद दिया। समस्त कार्यक्रम शान्तिपूर्वक सम्पन्न हुआ।

सामूहिक काउंसलिंग अभ्यास वर्ग

सेवा भारती, स्ट्रीट चिल्ड्रन्स प्रकल्प कलंदर कॉलोनी, दिलशाद गार्डन में 22 अगस्त, 2022 दिन सोमवार को महिला पंचयात, दिल्ली महिला आयोग तथा प्रकल्प द्वारा किशोर युवतियों तथा महिलाओं के लिये एक सामूहिक काउंसलिंग अभ्यास वर्ग का आयोजन किया गया। इसमें समाज में बालिकाओं के साथ हो रहे शोषण एवं अत्याचार से सजग रहने की शिक्षा दी गई। यौन उत्पीड़न एवं अन्य जघन्य अपराधों से डट कर मुकाबला करने की बात बतायी गई। अभ्यास वर्ग में लगभग 80 महिलाओं एवं बालिकाओं ने भाग लिया।

प्रयोग विहार में दस दिवसीय शिविर

गत दिनों प्रयोग विहार केंद्र पर 10 दिवसीय समर कैंप लगाया गया। इसमें 25 बच्चों ने भाग लिया। इसका मुख्य उद्देश्य था बच्चों में अच्छी आदतें डालना। जैसे- सुबह जल्दी उठना, योग करना, सूर्य देव को जल देना, तुलसी का पौधा लगाना और उसको रोजाना जल देना, और बच्चों को कम से कम एक मंत्र याद करवाना। इसके अलावा बच्चों को चित्रकला, नृत्य एवं गीत सिाया गया। दसवें दिन कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम में बच्चों द्वारा चित्रकला प्रतियोगिता एवं हवन किया गया 108 गायत्री मंत्र से बच्चों ने भक्ति गीत भी सुनाएं। कार्यकर्ताओं द्वारा बच्चों को पुरस्कार दिए गए। इस कार्यक्रम में विभाग एवं जिले की कार्यकर्ता उपस्थित रहे। संख्या 40 रही।

परामर्शदाता
आचार्य मायाराम पतंग
डॉ. राम कुमार

सम्पादक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

सहसम्पादक
शिवाली अग्रवाल

कार्यालय
सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर

एक प्रति : 10/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 100/-रुपये

सेवा समर्पण

वर्ष-39, अंक-12, कुल पृष्ठ-36, सितम्बर, 2022

विषय - सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
सम्पादकीय		04
'सुयश' ने कराया समाजसेवियों का संगम	वी.एस.के. भारत	07
..... संतों ने जगाई राष्ट्रीय चेतना	नरेन्द्र सहगल	10
गणेशोत्सव का महत्व	राजश्री	13
नारी का सम्मान करो	सतीश कुमार सैन	14
पितरों के प्रति आभार प्रकट करने का अवसर....	अमरनाथ झा	15
थैलासीमिया और उससे बचाव के उपाय	डॉ. वीणा सिंघल	17
सेवा करने से बीमारी से मिली मुक्ति	निर्मला	17
'निक्कर है पहचान हमारी'	रचना शास्त्री	18
'ऊँ' उच्चारण के लाभ	प्रतिनिधि	19
भगवान श्रीकृष्ण का न्याय	आदित्य नारायण झा 'अनल'	20
वर्तमान का एक अद्भुत दानवीर	धनंजय धीरज	22
कहानी : कमला की विदाई	आचार्य मायाराम 'पतंग'	24
कृतज्ञता (शुक्रिया)	एफ.सी. भाटिया	26
83 वर्ष के उत्साही कार्यकर्ता	प्रतिभा भटनागर	27
कश्मीर की रानी कोटा रानी की अमर कथा	प्रतिनिधि	33
किसान	आचार्य मायाराम पतंग	34

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

माँ-माया के भँवर में भैया

इस समय पूरा भारत अपनी स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मना रहा है। यह अच्छी बात है। यह भारत और भारतीयों के लिए गर्व करने का क्षण है। लेकिन देश के सामने कुछ ऐसी स्थिति भी खड़ी हो गई है, जो इस बात के मूल्यांकन के लिए बाध्य करती है कि आखिर हमारे शासकों ने ऐसी नीति ही क्यों बनाई कि पूरे देश के अधिकतर पढ़े-लिखे युवा दिल्ली, मुम्बई, बेंगलूरू, चैन्ने जैसे बड़े शहरों में ही रोजगार के लिए रहने को विवश हैं। उपरोक्त शहरों को छोड़ दें, तो आज भी लगभग पूरे भारत में सामान्य बुनियादी सुविधाएं भी ठीक से उपलब्ध नहीं हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, सड़क, बिजली, रोजगार जैसी सुविधाएं शहरों में अच्छी हैं, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी इन सुविधाओं का घोर अभाव है।

इस कारण गांव के लोग शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। वहीं कुछ न कुछ करके गुजारा कर रहे हैं। इसमें कोई दो राय नहीं है कि ऐसे लोगों को शहर में नाना प्रकार के कष्टों को सहना पड़ता है, लेकिन यह बात भी सच है कि उनके बच्चों को एक अच्छी शिक्षा मिल रही है। इस तरह के बच्चे थोड़े से सजग रहते हैं तो काफी कुछ कर भी जाते हैं। यह अच्छी बात है।

पर शहरों में अपने माता-पिता के साथ रहने वाले बच्चों को वे संस्कार नहीं मिल पा रहे हैं, जो उन्हें संयुक्त परिवार में मिलते हैं। दादा-दादी, नाना-नानी, चाचा-चाची, मामा-मामी फूफा-बुआ जैसे संबंधों के बारे में अधिकतर शहरी बच्चों को कोई जानकारी नहीं है। ऐसे बच्चे परिवार के नाम पर जानते हैं केवल अपने माता-पिता को। इस कारण बच्चे एकांकी होते जा रहे हैं। उनमें मानवीय संवेदनशीलता कम हो रही है। उन्हें परिवार के अन्य लोगों से लगाव नहीं हो रहा है। इस तरह के बच्चे अपनी मूल बोली या भाषा भी नहीं सीख पाते हैं। ये बच्चे अपनी लोक संस्कृति, लोक कला, लोक कथा, ग्रामीण परिवेश आदि से भी दूर जा रहे हैं। यह भारतीय परिवार व्यवस्था, भारतीय संस्कृति, भारतीयता आदि के लिए ठीक नहीं है।

रोजी-रोटी के लिए गांव से शहर आने वाले लोगों के लिए एक और समस्या है। जो युवा 20-25 वर्ष पहले गांव से शहर आए हैं, आज गांव में रहने वाले उनके माता-पिता वृद्धावस्था की दहलीज पर खड़े हैं या फिर वृद्ध हो चुके हैं। ऐसे में उनके साथ कुछ घटना-दुर्घटना हो जाती है, तो शहर में रहने वाले उनके बेटों के सामने बड़ा धर्म संकट खड़ा हो जाता है।

अभी कुछ दिन पहले मेरे एक परिचित के साथ ऐसा ही हुआ। वे मधुबनी जिले के रहने वाले हैं और दिल्ली में एक स्टील कंपनी में वरिष्ठ पद पर कार्य करते हैं। गांव में अम्मा के साथ रहने वाले उनके छोटे भाई ने एक दिन फोन किया और बताया कि अम्मा गिर गई हैं। उन्हें डॉक्टर के पास ले जा रहे हैं। वहां पता चला कि उनकी कमर की हड्डी टूट गई है। अब उनके सामने बड़ी समस्या खड़ी हो गई। प्राइवेट नौकरी में भले ही आप कितने बड़े पद पर हैं, लेकिन जब आप छुट्टी की बात करेंगे तो एक बार

आपसे अवश्य कहा जाएगा कि अभी तो काम का बहुत दबाव है, बाद में छुट्टी ले लेना। इस बात में बहुत कुछ छिपा होता है और इसे वही समझ सकता है, जो प्राइवेट नौकरी कर रहा होता है।

खैर, उन्हें एक सप्ताह के बाद छुट्टी मिली, पर रेल में आरक्षण नहीं मिला। लगभग 7,00 रु खर्च कर हवाई जहाज से दरभंगा गए। तब तक उनकी माताजी अस्पताल में ही थीं। 20 दिन तक अस्पताल में रखने के बाद डॉक्टर ने कहा कि अब इन्हें घर ले जाएं और वहीं इनकी सेवा करें। अभी कुछ महीनों तक इन्हें बिस्तर पर ही रहना पड़ेगा। यह सुनने के बाद तो उनके नीचे से जमीन खिसक गई। सबसे बड़ी समस्या तो यह थी कि माता जी की सेवा कैसे होगी! आखिर छोटा भाई अकेले कब तक सेवा करे! उसके भी अपने काम-धंधे हैं। फिर भी उसने कहा कि आप अम्मा की चिंता न करें, हम लोग देख लेंगे। लेकिन मां तो मां होती है। कोई बेटा बिस्तर पर पड़ी अपनी मां को छोड़कर हजारों किलोमीटर दूर नहीं जाना चाहेगा। लेकिन सबसे बड़ी समस्या थी कि उनकी छुट्टी समाप्त हो रही थी। अंत में उन्होंने एक दिन छोटे भाई से कहा कि अब मेरी छुट्टी नहीं बची। इसलिए दिल्ली जाना ही पड़ेगा, तुम माता जी की सेवा करो। यह कहकर उन्होंने एक दिन कांपते हुए हाथों से मां के पैर छुए और भाई को आंसुओं से गीला कर दिल्ली के लिए निकल गए।

उनके दिल्ली जाने की बात सुनकर ही मां रो रही थीं, लेकिन उनमें इतना साहस नहीं हुआ कि वे मां को कुछ कह पाते। उन्हें न तो रेलगाड़ी में नींद आई और न ही दिल्ली आने के बाद नींद आ रही है। मिले तो फफक कर रोने लगे। मेरे पास भी उनके लिए कोई शब्द नहीं था। भले ही उनका शरीर दिल्ली में है, पर उनका मन सदैव मां पर रहता है। वे विवश हैं। एक दिन तो कहने लगे, ''नौकरी छोड़कर मां की सेवा करूं तो बच्चों का क्या होगा! वे अभी पढ़ रहे हैं। नौकरी छूट जाने से उनकी पढ़ाई भी छूट जाएगी। चाह कर भी मां की सेवा नहीं कर पा रहा हूं।''

आज इस धर्म संकट से लाखों लोग जूझ रहे हैं। गांव से आकर शहरों में रहने वाले लोग भले ही कुछ रुपए कमा लेते हों, लेकिन जब उनके सामने ऐसा धर्म संकट खड़ा होता है, तो वे अंदर ही अंदर रोते रहते हैं।

ऐसे लोगों की एक और समस्या को जानना जरूरी है। शहरी कोलाहल और प्रदूषण से अनेक लोग बीमार हो रहे हैं। मेरे एक साथी की पत्नी कुछ दिन पहले बीमार हुई। वे प्राइवेट नौकरी करते हैं, किराए के मकान में रहते हैं। एक बहुत ही प्यारा छोटा बच्चा है। सुबह से शाम तक काम ही काम। बहुत मुश्किल से समय निकाल कर पत्नी को एक निजी अस्पताल में ले गए। पता चला कि उनकी दोनों किडनी ही बेकार हो चुकी है। ऑफिस की ओर से मेडिक्लेम था। इसलिए डॉक्टर ने तुरंत भर्ती कर लिया। एक सप्ताह में ही करीब 6,00,000 रु. का बिल बन गया। इतने का तो मेडिक्लेम नहीं था। इसलिए बाकी राशि की व्यवस्था जैसे-तैसे की गई। अब उनकी पत्नी की स्थिति यह है कि हर सप्ताह तीन दिन डायलिसिस करवाना पड़ता है। समझ सकते हैं कि उस भाई के साथ क्या बीत रही होगी। दो-ढाई महीने से नौकरी नहीं कर पा रहे हैं। हाथ पूरी तरह खाली हो चुका है। वे गांव भी हीं जा सकते हैं, क्योंकि वहां डायलिसिस की व्यवस्था नहीं है। परिवार के लोगों की मदद से पत्नी का इलाज करा रहे हैं। पर ऐसा कब तक होगा!

अब एक बार फिर वहीं लौटते हैं, जहां से बात शुरू हुई थी। यानी स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव पर। यह अमृत महोत्सव तब सार्थक होगा जब पूरे भारत में शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार की अच्छी व्यवस्थाएं हों।

आशा है कि 2047 में जब हम अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी मनाएंगे तब तक भारत का हर हिस्सा उपरोक्त सुविधाओं से सुसज्जित हो जाएगा। ऐसा होने पर ही कोई 'भाई' मां और माया के भंवर में फंसकर रोने के लिए विवश नहीं होगा। ❐

पाथेय

केयूरा न भूषयन्ति पुरुषं, हारा न चंद्रोज्वला।
नस्नानं नविलेपनंनकुसुमं, नालंकृता मूर्धजा।
वाण्येकासमलंकरोतिपुरुषं यासंस्कृता धार्यते।
क्षीयन्तेखलुभूषणानिसततं वाग्भूषणं भूषणम्।।

सरलार्थ : किसी पुरुष की शोभा बाजूबंद या चमकते हुए हार से नहीं होती, न ही स्नान करने या क्रीम आदि लगाने से होती है। ऐसे सभी आभूषण नष्ट हो जाते हैं, केवल सभ्यता पूर्ण मीठी बोली ही व्यक्ति की शोभा बढ़ाती है।

शाश्वत धर्म

वास्तविक बल वही है जो बुराइयों को दूर करने वाला है। जो बल बुराई को नष्ट नहीं कर सकता वह हेय है। बलवान व्यक्ति का यश इसी में है कि वह दीन दुखी, निर्बल तथा निर्धन व्यक्ति की सुरक्षा करे। उन पर अत्याचार न होने दे। निर्बल के संरक्षण के लिए अपने प्राणों की भी बाजी लगा दे।

- स्वामी विज्ञानानंद सरस्वती

सितम्बर 2022 माह के स्मरणीय दिवस

दिनांक	वार	महत्व
01.09.2022	गुरुवार	ऋषि पंचमी पर्व
02.09.2022	शुक्रवार	श्री बल्देव षष्ठी तिथि
03.09.2022	शनिवार	श्रीराधा अष्टमी पर्व
05.09.2022	सोमवार	शिक्षक दिवस
07.09.2022	बुधवार	जलझूलनी एकादशी
08.09.2022	गुरुवार	विश्व साक्षरता दिवस
09.09.2022	शुक्रवार	अनन्त चतुर्दशी
10.09.2022	शनिवार	श्राद्ध पूर्णिमा
11.09.2022	रविवार	सन्त विनोवा जयंती

दिनांक	वार	महत्व
14.09.2022	बुधवार	हिन्दी दिवस
16.09.2022	शुक्रवार	समर्थ गुरु रामदास निर्वाण
17.09.2022	शनिवार	विश्वकर्मा दिवस
25.09.2022	रविवार	श्राद्ध अमावस्या एवं पंडित दीनदयाल जयंती
26.09.2022	सोमवार	श्री अग्रसेन जयंती, नवरात्र प्रारंभ (प्रथम दिन)
27.09.2022	मंगलवार	पर्यटन दिवस
28.09.2022	बुधवार	सरदार भगत सिंह जयंती

'सुयश' ने कराया समाजसेवियों का संगम

■ वी.एस.के. भारत

गत 21 अगस्त को नई दिल्ली के जनपथ स्थित आंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर में एक ऐसी परिचर्चा हुई, जो आने वाले समय में दिल्ली में इतिहास रचने वाली है। इसमें 707 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसका आयोजन 'सुयश' के बैनर तले हुआ। 'सुयश' यानी समाज उपयोगी युवा शक्ति। बता दें कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, दिल्ली प्रांत ने समाज सेवा में लगे युवाओं को मंच देने के लिए 'सुयश' का गठन किया है। उपरोक्त परिचर्चा में ऐसे ही संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया और अपने अनुभव बांटे। विशेष बात यह रही कि इन प्रतिनिधियों को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहनराव भागवत जी का मार्गदर्शन मिला।

सेवा का कार्य ईश्वर का कार्य है, इस भाव से जब हम सेवा कार्य करते हैं तो सभी कार्य स्वयं पूर्ण होने लगते हैं।

-डॉ. मोहनराव भागवत, सरसंघचालक, रा.स्व.संघ

डॉ. भागवत ने कहा कि जब हमारे अंत:करण में अपनत्व का भाव होगा, तभी हम दूसरों की सेवा कर पाएंगे। समाज सेवा के भाव से मानवता का वैभव बढ़ता है और संपूर्ण समाज में सेवा का भाव जाग्रत होता है। उन्होंने कहा कि सामाजिक कार्यों से मानवता का कल्याण तो होता ही है, साथ ही राष्ट्र को भी गति मिलती है। उन्होंने कहा कि सेवा का भाव 'मैंने किया है' में नहीं है, बल्कि 'समाज के लिए किया है, अपनों के लिए किया है, राष्ट्र के लिए किया है', इस तरह का सेवा का भाव होना चाहिए। सेवा से समाज का हौसला बनता है और समाज खड़ा होता है। उन्होंने कहा कि सेवा का कार्य ईश्वर का कार्य है, इस भाव से जब हम सेवा कार्य करते हैं तो सभी कार्य स्वयं पूर्ण होने लगते हैं। भगवान स्वयं सेवा करने वालों को बल देते हैं, वास्तव में मानव मात्र की सेवा ही ईश्वर की सेवा है। सरसंघचालक जी ने कहा कि वास्तव में यही भारतीय दर्शन और चिंतन है। संत तुकाराम के संदेशों का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि जो वंचित है, जो अभावग्रस्त है, जो पीड़ित है, उनकी जो सेवा करता है वही साधु है।

कार्यक्रम में भरतपुर (राजस्थान) में 'अपना घर' नाम के स्वयंसेवी संगठन चलाने वाले डॉ. बृजमोहन भारद्वाज ने बताया कि वे बे-सराहा छोड़े गए लोगों के लिए 'अपना घर' नाम से संगठन चलाते हैं। इसमें सभी बेसहारा लोगों को प्रभु के नाम से संबोधित किया जाता है। डॉ. भारद्वाज ने बताया कि वे अपना संगठन चलाने के लिए किसी से किसी भी तरह की सहायता नहीं लेते, बल्कि किसी भी मदद के लिए ठाकुर जी को पत्र लिखते हैं जो सदैव उनकी मदद करते आ रहे हैं। त्रिलोकपुरी दिल्ली में 'नया रास्ता' नाम से सामाजिक संगठन चलाने वाली रेणु सिंह ने बताया कि वह 10 वर्ष से पुनर्वास बस्ती में महिला सशक्तिकरण और बच्चों की शिक्षा के लिए काम कर रही हैं। किशोर मंडल और किशोरी मंडल का गठन करके उनका संगठन बच्चों के भीतर संस्कार और सामाजिक सेवा का भाव भी जाग्रत कर रहा है। रेखा पुंडीर ने बताया कि उनका संगठन गरीब बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा प्रदान कर उन्हें समाज का जिम्मेदार नागरिक बनाने की पहल कर रहा है। बृजपुरी (दिल्ली) में 'युवा शक्ति' के नाम से संगठन चलाने वाले मोहित कुमार ने बताया, दिल्ली में हुए दंगों के बाद उनके क्षेत्र में हिन्दुओं के पलायन की

समस्या खड़ी हो गई थी, जिसे उनके संगठन ने रोकने का काम किया। उनका संगठन धार्मिक और सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से हिन्दू समुदाय में आत्मविश्वास का संचार करने का काम करता है। 'छोटी सी आशा' नाम के संगठन का संचालन करने वाली सुशीला ओम ने बताया कि उनके संगठन ने कोविड के समय लोगों को अस्पताल पहुंचाने से लेकर दवाइयां और भोजन प्रदान करने का काम किया। उनका संगठन श्रमिक वर्ग की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में जुटा है। पंडित हरिओम ने बताया कि उनका संगठन योग, संगीत, हवन जैसी भारतीय परंपराओं के प्रसार के लिए दिल्ली के गरीब युवाओं के बीच काम कर रहा है। गौतम नगर (दिल्ली) में 'ज्वाइंट-टू-गेदर' नाम से संगठन चलाने वाले अमित कुमार ने बताया कि गरीब मजदूरों के बच्चों को विद्यालयों में दाखिले से लेकर उन्हें पाठ्य सामग्री और पोषाक देकर उनका संगठन गरीब बच्चों को पढ़ाई के लिए जागरूक करने का काम कर रहा है।

सुयश के साथ जुड़े सभी सामाजिक संगठनों के सेवा कार्यों की हर स्तर पर मदद की जाएगी और सेवा कार्यों के माध्यम से समाज को सशक्त बनाया जाएगा।

-कुलभूषण आहूजा, प्रांत संघचालक, रा.स्व.संघ, दिल्ली

'रसोई ऑन व्हील' संगठन की प्रमुख मोनिका बधवार ने कहा कि गरीब और अभावग्रस्त बच्चों को पौष्टिक भोजन मुहैया कराने के लिए उनका संगठन कार्यरत है। 'यूनाइटेड सिक्ख' संस्था के मुखिया जसपाल सिंह ने बताया कि भारत ही नहीं, बल्कि दुनिया के कई देशों में उनका संगठन लोगों के बीच सेवा का काम कर रहा है। दिल्ली के नत्थूपुरा में 'राज बाला कोचिंग' के नाम से संगठन चलाने वाली सविता ने बताया कि उनका संस्थान महिलाओं और बच्चों को नि:शुल्क कंप्यूटर शिक्षा देने का काम कर रहा है। अरुण कुशवाहा ने बताया कि उनका संगठन 'संस्कार कर्म फाउंडेशन' शारीरिक और मानसिक विकास के लिए लोगों के बीच योग सिखाने का काम कर रहा है। चिल्ला गांव (दिल्ली) के सुनील ढेडा ने बताया कि उनका संगठन गौ माता की सेवा के लिए काम करता है। अभी तक 2 हजार बीमार गायों का उपचार किया है। बीमार पशुओं के इलाज के लिए पशु एंबुलेंस का भी संचालन करता है। डॉ. उर्वशी मित्तल ने कहा कि उनका संगठन बेटियों के विकास के लिए काम करता है।

जनकपुरी (दिल्ली) से आई सोनिया ने बताया कि उनका संगठन मजदूरों के बच्चों को शिक्षित करने का काम कर है। उनका प्रयास है कि इलाके का कोई बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे। नवादा (दिल्ली) के सम्यक जैन ने बताया कि 'पारस सेवा संस्थान' नाम से उनका संगठन बीमार और घायल पक्षियों का इलाज कर उन्हें मुक्त करने का काम करता है। उनके संगठन ने 5200 से ज्यादा पक्षियों का इलाज कर उन्हें स्वतंत्र हवा में उड़ान भरने के लिए छोड़ा है। वहीं दिल्ली की वंदना वत्स ने बताया कि उनका संगठन 'आद्य फाउंडेशन' किन्नर और सेक्स वर्कर समाज के बच्चों को वहां के माहौल से दूर करके उन्हें शिक्षित बना कर पैरों पर खड़ा कर रहा है। दिल्ली में ही दृष्टिहीन बच्चों के लिए काम करने वाले सुनील मिश्र ने बताया कि वे बिना किसी सरकारी मदद के दृष्टिहीन बच्चों को पढ़ा-लिखा कर सक्षम बना रहे हैं। उनके संस्थान से निकले 100 से अधिक दृष्टिहीन बच्चे दिल्ली और केंद्र सरकार की नौकरियों में सेवारत हैं। बदरपुर (दिल्ली) के सुनील चौटाला ने बताया कि उनका संगठन दिल्ली को हरा-भरा बनाने के लिए वृक्षारोपण का काम करता है। वे जन्मदिन और विवाह के अवसर पर

लोगों को पेड़ लगाने के लिए प्रेरित करते हैं। रोशनी रहेजा ने बताया कि उनका संगठन 'सुखमनी सेवा ऑर्गेनाइजेशन' दिल्ली के श्मशान घाटों से लावारिस शवों की अस्थियां एकत्र कर उनका गंगा घाट पर जाकर विधिवत संस्कार करने का काम करता है। 18 साल की दीक्षा ध्यानी ने बताया कि उनका संगठन बच्चों के जन्मदिन पर उन्हें केक काटने से रोक कर किसी वृद्धाश्रम में जाकर जन्मदिन मनाने के लिए प्रेरित करता है। कोमल राणा ने बताया कि उनका संगठन श्रमिकों के बच्चों को एकत्र कर उन्हें पढ़ाने का काम करता है और उनके अंदर भारतीय संस्कृति के संस्कार डालने का प्रयास करता है। वहीं पुष्पा कौशिक ने बताया कि कौशल विकास योजना के अंतर्गत उनका संगठन महिलाओं को प्रशिक्षित कर आत्मनिर्भर बना रहा है। घुमंतू लोहार समुदाय की बेटी सिमरन ने बताया कि आज घुमंतू समाज के बच्चे भी उच्च शिक्षा लेकर समाज की मुख्यधारा में शामिल हो रहे हैं। वे अपने समाज के बच्चों को शिक्षा के लिए जागरूक करने का काम कर रही हैं।

कोरोना काल में संघ के कार्यकर्ताओं ने केवल मानव जाति की सेवा नहीं की, बल्कि पशु-पक्षियों और बेजुबान जानवरों की भी सेवा करके राह दिखाने का काम किया।

-भारत भूषण, प्रांत कार्यवाह, रा.स्व.संघ, दिल्ली

मुखर्जी नगर के सुमन कुमार ने बताया कि उनका संगठन दिल्ली के स्लम इलाकों में बच्चों की शिक्षा और पौधारोपण के लिए काम कर रहा है। शास्त्री नगर के चंद्रशेखर ने बताया कि उनका संगठन श्मशान घाटों पर लकड़ी, पानी, विश्राम स्थल, साफ-सफाई और व्यवस्था के लिए काम करता है। नजफगढ़ से आए मनोज कुमार ने कहा कि उनका संगठन इलाके में एक वृद्धाश्रम का संचालन करता है, जहां बुजुर्गों को सभी सुविधाएं नि:शुल्क उपलब्ध हैं। करावल के प्रदीप माथुर ने बताया कि उनका संगठन युवाओं को नशा मुक्ति और संस्कार के लिए काम करता है। मंडावली के पंकज कुमार ने बताया कि उनका संगठन 'विजय फाउंडेशन' स्वच्छता, वृक्षारोपण, नारी सशक्तिकरण और बाल शिक्षा के क्षेत्र में काम करता है। 'परम शक्तिपीठ' की साध्वी सत्यप्रिया ने बताया कि उनका संगठन समाज द्वारा त्यागे गए बच्चों को पढ़ाने और उन्हें देश का अच्छा नागरिक बनाने के लिए काम करता है।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दिल्ली प्रांत कार्यवाह श्री भारत भूषण जी ने कहा कि कोरोना के समय में जिस तरह से संघ के कार्यकर्ताओं ने अपने जीवन की परवाह न करते हुए समाज सेवा का कार्य किया, वह अनुकरणीय है। उन्होंने कहा कि समाज सेवा के लिए हमें सरकार या प्रशासन की तरफ मुंह नहीं ताकना चाहिए, बल्कि स्वयं पहल करके लोगों को राहत पहुंचाने का काम करना चाहिए। कोरोना काल में संघ के कार्यकर्ताओं ने केवल मानव जाति की सेवा नहीं की, बल्कि पशु-पक्षियों और बेजुबान जानवरों की भी सेवा करके राह दिखाने का काम किया। उन्होंने कहा कि सुयश सामाजिक सेवा, धार्मिक क्रियाकलाप, पर्यावरण गतिविधियां, सेवा बस्तियों में सेवा कार्य जैसे कार्य करने वाले संगठनों के साथ खड़ा है। सुयश के साथ मिलकर सभी सेवा संगठन अगर समाज सेवा का काम करेंगे तो राष्ट्र उन्नति करेगा। कार्यक्रम में आए सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद करते हुए दिल्ली प्रांत संघचालक श्री कुलभूषण आहूजा जी ने कहा कि सुयश के साथ जुड़े सभी सामाजिक संगठनों के सेवा कार्यों की हर स्तर पर मदद की जाएगी और सेवा कार्यों के माध्यम से समाज को सशक्त बनाया जाएगा। ❐

स्वामी दयानंद, स्वामी विवेकानंद, महर्षि अरविंद जैसे संतों ने जगाई राष्ट्रीय चेतना

■ नरेन्द्र सहगल

विश्व के एकमात्र प्रथम राष्ट्र भारत को यदि 'अध्यात्मिक राष्ट्र' की संज्ञा से सम्मानित किया जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। भारतीय संतों ने सदैव 'भक्ति से शक्ति' के सिद्धांत को चरितार्थ करते हुए समाज को जागृत रखा। विदेशी एवं विधर्मी आक्रांताओं द्वारा जब भी भारत पर आक्रमण करके यहां के जीवन मूल्यों को समाप्त करने का प्रयास किया गया, हमारे इन्हीं आध्यात्मिक संतों ने समाज को जगा कर एकात्मता स्थापित करने के अपने राष्ट्रीय कर्तव्य की पूर्ति की।

चिर सनातन काल से आज तक हमारी संत शक्ति अपने राष्ट्रीय दायित्व को निभाती चली आ रही है। जब रावण की राक्षसी वृत्ति ने सर उठाया तो विश्वामित्र, अगस्त्य और वशिष्ठ इत्यादि संतो द्वारा प्रतिष्ठापित क्षात्र धर्म में से धनुर्धारी राम प्रकट हुए। महाभारत काल में अधर्म का विनाश करने के लिए महर्षि वेदव्यास और संदीपन गुरु के आश्रम से प्रशिक्षण लेकर स्वयं योगेश्वर श्रीकृष्ण ने अर्जुन जैसे महारथी योद्धा को रणक्षेत्र में उतारा।

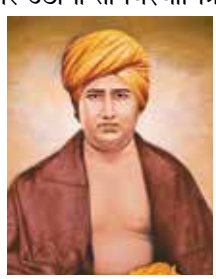

बौद्ध युग में भी यही परंपरा सामने आई। जब हमारे ही राज्याधिकारियों ने विदेशी आक्रमणकारियों को बुलाकर उनकी सहायता की तो पुनः एक महासंत आदि शंकराचार्य ने राष्ट्रीय चेतना को जागृत करके राष्ट्रद्रोहियों के उच्छेदन का सफल कार्य संपन्न किया। इसी के फलस्वरूप चाणक्य जैसे धुरंधर राष्ट्रनायकों ने चंद्रगुप्त जैसे वीरव्रती सम्राट तैयार किए। इस तरह विदेशी आक्रांताओं को समाप्त किया जा सका।

आगे चलकर स्वामी विद्यारण्य द्वारा चलाई गई भक्ति की प्रचंड लहर में से महाराज कृष्णदेव जैसे शूरवीर निकले, जिन्होंने वैभवशाली विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की। इस्लामिक आक्रांताओं के समय भी तुलसीदास, चैतन्य, ज्ञानेश्वर, रामानंद, समर्थ गुरु रामदास, श्री गुरु नानक देव जी एवं नामधारी सतगुरु रामसिंह कूका इत्यादि संतों द्वारा किए गए भक्ति आंदोलन के परिणाम स्वरूप छत्रपति शिवाजी महाराज एवं भारत-रक्षक खालसा पंथ के संस्थापक दशमेश पिता श्री गुरु गोविंद सिंह जी महाराज प्रकट हुए जिन्होंने मुगलिया दहशतगर्दी की ईंट से ईंट बजा दी।

भारत पर अवैध कब्जा किए बैठे विदेशी एवं विधर्मी फिरंगियों (अंग्रेजों) के समय में भी हमारे संतों, महात्माओं ने आगे आकर समाज में वीरव्रतम् भाव उत्पन्न करने का सफल प्रयास किया। स्वामी दयानंद, स्वामी विवेकानंद, महर्षि अरविंद, स्वामी रामतीर्थ इत्यादि संतों द्वारा उत्पन्न हिंदू जागृति में से ही नाना फडणवीस, तात्या टोपे, नामधारी स्वतंत्रता सेनानी, चंद्रशेखर आजाद, सरदार भगत सिंह, वीर सावरकर तथा सुभाष चंद्र बोस जैसे क्रांतिकारी उत्पन्न हुए।

इसी श्रेणी के महापुरुषों में साबरमती के संत महात्मा गांधी और संघ संस्थापक डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार ने स्वयं को तिल-तिल करके जलाकर पूरे भारत को एक सूत्र में बांधकर स्वतंत्रता आंदोलन को धार प्रदान की। जहां महात्मा गांधी ने अंग्रेजभक्त कांग्रेस के दोनों धड़ों को एक मंच पर लाने का कार्य किया, वहीं डॉ. हेडगेवार ने संघ की स्थापना करके शक्तिशाली हिंदू संगठन को तैयार कर दिया। परिणामस्वरूप महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में हुए सभी सत्याग्रहों में संघ के स्वयंसेवकों की भागीदारी सबसे अधिक रही। स्वयंसेवक फांसी के तख्तों पर भी बलिदान हुए। अनेक ने जेलों में यातनाएं सहीं। स्वयं डॉ. हेडगेवार भी दो बार जेल गए।

उपरोक्त संदर्भ में संत / महात्माओं की प्रेरणा, आशीर्वाद और उनके संगठन कौशल का विशेष महत्व है। स्वतंत्रता संग्राम में स्वामी दयानंद और उनके द्वारा

स्थापित 'आर्य समाज' ने इस राष्ट्रनिष्ठ 'धर्म जागरण' में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पूरे भारत विशेषकर उत्तरी एवं मध्य भारत में ईसाई पादरियों के हिंदू विरोधी एजेंडे के परखच्चे उड़ा दिए। प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी एवं राष्ट्रवादी कांग्रेस (गरम दल) के ध्वजवाहक अमर शहीद लाला लाजपत राय के अनुसार – "स्वामी दयानंद पहले व्यक्ति थे जिन्होंने 'भारत भारतीयों का' का गगनभेदी नारा गुंजाया था। ...वे भारत में स्वदेशी के जनक थे, जिन्होंने कहा था कि विदेशी राज्य कभी भी स्वराज्य का प्रतिनिधि नहीं हो सकता।" इस ऐतिहासिक तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि स्वामी दयानंद ने न केवल 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की नींव ही रखी, अपितु वे इसके बाद भी 90 वर्ष तक अंग्रेजों के विरुद्ध लड़े गए सशस्त्र एवं अहिंसक दोनों प्रकार के संघर्ष के प्रेरक बने।

स्वामी दयानंद के अनुसार – "देश राष्ट्र एवं समाज की उन्नति देश के आध्यात्मिक / सांस्कृतिक उत्थान में ही है।" सन 1857 के बाद आर्य समाज द्वारा प्रारंभ किए गए अनेक विध समाज-सुधारों, शुद्धि-आंदोलनों (घर वापसी) तथा ईसाई अथवा अंग्रेज विरोधी गतिविधियों से अनेक राष्ट्रवादी स्वतंत्रता सेनानी उत्पन्न हुए, जिन्होंने ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वामी श्रद्धानंद, लाला लाजपत राय, सरदार भगत सिंह, श्यामजी कृष्ण वर्मा, राम प्रसाद बिस्मिल, वीर सावरकर, सुभाष चंद्र बोस, डॉक्टर हेडगेवार और श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसे राष्ट्र नेताओं पर आर्य समाज का विशेष प्रभाव रहा।

सन 1857 के पूर्व इसी कालखंड में आध्यात्मिक जगत के एक अन्य संन्यासी स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के जागरण में अपनी विशेष भूमिका निभाई। आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत ऊंचे उठ चुके इस महात्मा ने नैतिक जीवन, आत्मा परमात्मा की एकता, सभी जातियों में एकता, मानव समाज की सेवा इत्यादि भारतीयता (हिंदुत्व) के सिद्धांतों के प्रचार को केंद्र बनाकर ईसाइयत के खिलाफ एक प्रकार का मौन युद्ध छेड़ दिया।

स्वामी रामकृष्ण की आध्यात्मिक शक्ति में संस्कारित होकर स्वामी विवेकानंद जैसे राष्ट्रभक्त तथा बंकिमचंद्र जैसे देशभक्त राष्ट्रवादी नेता तैयार हुए। जिन्होंने देश के आत्मगौरव को जागृत करने एवं 'वंदे मातरम' राष्ट्र गीत लिखकर भारत और भारतीयता (हिंदुत्व) की ध्वजा को भारत सहित पुरे विश्व में फहरा दिया। 1857 से पूर्व और पश्चात हिन्दू संतों द्वारा जागृत की गयी प्रचंड राष्ट्रीय चेतना को अपने लिए एक बड़ी चुनौती मानकर अंग्रेजों ने एक ऐसी संस्था की कल्पना की जो सशस्त्र क्रांति का विरोध करके अहिंसावादी आन्दोलन चलाती रहे। अंग्रेजों की इसी विघटनकारी सोच में से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म हुआ। भारतीयों के रोष का दबाने का षड्यंत्र था यह।

अंग्रेजों के इस षड्यंत्र को विफल करने के लिए अनेक संत महात्मा आगे आए। स्वामी विवेकानंद, स्वामी रामतीर्थ, महर्षि अरविंद, नामधारी सतगुरु राम सिंह कूका जैसे संतों एवं लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, महामना मदन मोहन मालवीय जैसे प्रखर राष्ट्रवादी तथा हिंदुत्व निष्ठ नेताओं ने अपनी-अपनी संस्थाओं के माध्यम से राष्ट्र जागरण की प्रचंड लहर चलाकर भारतीय समाज में आत्मविश्वास पैदा करने का ऐतिहासिक काम कर दिया।

स्वामी विवेकानंद ने भारत की आत्मा हिंदुत्व को जगाने के लिए देश के नवयुवकों को शक्ति की आराधना का पाठ पढ़ाते हुए कहा – "पचास वर्षों तक सभी देवी-देवताओं को भूलकर केवल भारत माता की पूजा करो। उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक उद्देश्य पूरा ना हो जाए।" स्पष्ट है कि यह उद्देश्य अखंड भारत की पूर्ण स्वतंत्रता ही था। भारत में भारतीय संस्कृति के पुनर्जागरण के साथ स्वामी जी विदेशों में भी हिन्दू धर्म के उज्जवल सिद्धांतों के प्रचार के साथ ईसाई पादरियों एवं शासकों द्वारा भारत में किये जा रहे अत्याचारों की पोल खोली।

स्वामी विवेकानंद का यह आह्वान – "वीरों साहस का अवलंबन करो। गर्व से कहो कि मैं हिन्दू हूँ - भारतवासी हूं।" स्वामी जी के आदेशानुसार लोकमान्य तिलक, वीर सावरकर, भाई परमानन्द, डॉ. हेडगेवार तथा रामधारी सिंह दिनकर ने युवकों को संगठित / शक्तिशाली होने का आह्वान किया। स्वामी जी के अनुसार जब तक भारत माता के हाथों में पड़ी परतंत्रता की बेड़ियाँ टूट नहीं जातीं तब तक विदेशी शासकों के विरुद्ध जंग को हिम्मत के साथ जारी रखो। रुको मत।"

स्वामी विवेकानंद ने 19वीं शताब्दी के अंतिम दशक में युवकों को शक्ति की आराधना करने का आह्वान

किया था। इतिहास के पन्ने साक्षी हैं कि इन्हीं पचास वर्ष में सरदार भगत सिंह, सावरकर, सुभाष, लाला हरदयाल, चंद्रशेखर आजाद, शचीन्द्रनाथ सान्याल, राजगुरु, सुखदेव, मदन लाल ढींगरा, ऊधम सिंह, खुदीराम बोस, चाफेकर बन्धु, बटुकेश्वर दत्त, करतार सिंह सराभा जैसे हजारों क्रांतिकारी नवयुवकों ने सशस्त्र क्रांति की अलख जगा दी।

इसी तरह युवकों में नवतेज जागृत करके उन्हें सशस्त्र क्रांति के माध्यम से मातृभूमि भारत के लिए अपने प्राणों की आहुति देने के लिए तैयार करने में महर्षि अरविंद की पार्श्व भूमिका का भी बहुत महत्वपूर्ण योगदान था। अंग्रेजी शिक्षा और ईसाई मत के संस्कारों में पलकर भी स्वामी अरविंद में भारत और भारतीय संस्कृति की ज्वाला कैसे प्रस्फुटित हो गई? इस प्रश्न का उत्तर भी तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों में मिलता है। हिंदुत्वनिष्ठ महाराजा बड़ौदा की प्रेरणा से अरविंद ने संस्कृत सीखी और इसके साथ ही वेदों, उपनिषदों इत्यादि भारतीय शास्त्रों का अध्ययन किया। लोकमान्य तिलक ने इस युवा को मातृभूमि की सेवा में सर्वस्व अर्पण करने के लिए तैयार कर दिया।

इन्हीं दिनों महर्षि अरविंद ने वंदेमातरम तथा युगांतर नामक दो साप्ताहिक पत्रों में लेख लिखने शुरू किए। उनके लेखों में मां भारती की वंदना, विधर्मी शासकों के प्रति घृणा, नवयुवकों को क्रांति पथ पर चलने का आह्वान इत्यादि वीरव्रती सामग्री रहती थी। इन लेखों से प्रेरणा लेकर हजारों युवा स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े।

आगे चलकर श्री अरविंद ने महाराष्ट्र और बंगाल के प्राय: सभी क्रांतिकारी दलों को एकजुट करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। कलकत्ता को केंद्र बनाकर सारे देश में सशस्त्र क्रांति की मशाल जलाने के लिए प्रयासरत अनुशीलन समिति के गठन तथा संचालन में भी अरविंद ने ठोस भूमिका निभाई। देश के विभिन्न स्थानों को केंद्र मानकर सक्रिय क्रांतिकारियों में उत्साह भरने के लिए श्री अरविंद ने एक पम्पलेट 'भवानी मंदिर' लिखा। इस कथित खतरनाक पम्पलेट की हजारों प्रतियां लगभग सभी क्रांतिकारियों तक पहुंच गई।

सरकार ने इस पम्पलेट को जब्त कर के श्री अरविंद के खिलाफ चल रहे अलीपुर बम केस में इसे सबूत के रूप में प्रस्तुत कर दिया। परिणाम स्वरूप श्री अरविंद को जेल यात्रा का अनुभव प्राप्त हुआ। कारावास में ही गहन साधना करते हुए आध्यात्मिक शक्ति के दर्शन हुए। अब श्री अरविंद ने आध्यात्मिक क्रांति का मार्ग प्रशस्त करने का निर्णय लेकर स्वयं को इस ओर सक्रिय कर लिया।

इसी कालखंड में राजा राममोहन राय ने ब्रह्मसमाज नामक संस्था की स्थापना करके भारत में हिंदुत्व के जागरण का बीड़ा उठाया। ब्रह्मसमाज का उद्देश्य ईसाइयत के बढ़ते प्रभाव को रोकने के साथ-साथ हिंदू समाज की कुरीतियों को दूर करके एक शक्तिशाली हिंदू संगठन तैयार करना था। राजा राममोहन की इस तीव्र राष्ट्रनिष्ठा को देखकर अनेक सामाजिक नेता एवं क्रांतिकारी युवक ईसाई तानाशाहों के विरुद्ध देश में हो रहे स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े।

इसी तरह भारत के कोने-कोने में अनेक संतों-महात्माओं ने धार्मिक प्रवचनों, प्रभात फेरियों, धार्मिक पर्वों तथा गुरु पर्वों के आध्यात्मिक मार्ग को अपना कर समाज को विधर्मी शासकों के विरुद्ध एकजुट करने में अपने राष्ट्रीय कर्तव्य को सफलतापूर्वक निभाया। अत: विदेशी/विधर्मी शासकों का तख्ता पलटने के लिए जितने प्रकार के प्रयास भारत में हुए, इनकी पीठ पर हमारी अध्यात्मिक संत शक्ति का वरदहस्त सदैव बना रहा। ❐

फीके हो गए समस्त त्योहार

■ **प्रेमलता सत्यार्थ (आचार्य जी)**

भारत की स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगाँठ पर उत्साह का सैलाब, सम्पूर्ण वर्ग तिरंगामय हो गया। न राजनीति, न सियासत, न किसी वर्ग का वर्गीकरण। हर तरफ राष्ट्रीयता की भावना का जन्म एवं प्रदर्शन। यह राष्ट्र के भविष्य के लिए अच्छा संकेत है। एक जागती हुई चेतना का आभास। हमें गर्व है कि हम धरातल से ऊपर उठे, नहीं तो रसातल में जा रहे थे। हृदय से हम सबको धन्यवाद, राष्ट्र निर्माण की एक कड़ी बनने के लिए। ❐

गणेशोत्सव का महत्व

■ राजश्री

गणेशोत्सव श्री बाल गंगाधर तिलक ने अंग्रेजों के खिलाफ भारतीयों को एकजुट करने के लिए आयोजित किया था, जो कि धीरे-धीरे पूरे राष्ट्र में मनाया जाने लगा है। धार्मिक ग्रन्थों के अनुसार श्री वेदव्यास ने गणेश चतुर्थी से महाभारत कथा श्री गणेश जी को लगातार 10 दिन तक सुनाई थी, जिसे श्री गणेश जी ने अक्षरश: लिखा था। 10 दिन बाद जब वेदव्यास जी ने आंखें खोलीं तो पाया कि 10 दिन की अथक मेहनत के बाद गणेश जी का तापमान बहुत अधिक हो गया है। तुरंत वेदव्यास जी ने गणेश जी को निकट के सरोवर में ले जाकर ठंडा किया था। इसलिए गणेश स्थापना कर चतुर्दशी को उनको शीतल किया जाता है।

इसी कथा में यह भी वर्णित है कि श्री गणपति जी के शरीर का तापमान न बढ़े इसलिए वेदव्यास जी ने उनके शरीर पर सुगंधित सौंधी माटी का लेप किया। यह लेप सूखने पर गणेश जी के शरीर में अकड़न आ गई। माटी झरने भी लगी। तब उन्हें शीतल सरोवर में ले जाकर पानी में उतारा। इस बीच वेदव्यास जी ने 10 दिन तक श्री गणेश को मनपसंद आहार अर्पित किए। तभी से प्रतीकात्मक रूप से श्री गणेश प्रतिमा का स्थापन और विसर्जन किया जाता है और 10 दिन तक उन्हें सुस्वादु आहार चढ़ाने की भी प्रथा है।

गणेश विसर्जन : महत्व और उत्सव

विशाल गणेश चतुर्थी उत्सव का समापन या आखिरी दिन तब होता है जब गणेश विसर्जन होता है। इस दिन को अनंत चतुर्दशी के रूप में भी मनाया जाता है। गणपति विसर्जन का पवित्र दिन बहुत खुशी और भव्यता के साथ मनाया जाता है, क्योंकि भक्त अपने प्रिय भगवान गणेशजी को अगले साल लौटने के वादे के साथ वापस अपने स्थान पर जाने के लिए विदाई देते हैं।

गणेश चतुर्थी एक दस दिवसीय त्योहार है जो भाद्रपद माह के चौथे दिन शुरू होता है। अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार, यह त्योहार अगस्त या सितंबर के महीने में आता है। उत्सव को विस्तृत पंडालों, घरों या अन्य सार्वजनिक स्थानों पर भगवान गणेशजी की मूर्ति स्थापित करके मनाया जाता है। विनायक चतुर्थी का उत्सव भगवान गणपति की मूर्ति को समुद्र में या किसी अन्य जल निकाय में विसर्जन के साथ संपन्न होता है। बड़ी संख्या में भक्त सड़कों पर बहुत भव्यता और धूमधाम के साथ शोभायात्रा निकालते हैं। यह त्योहार महाराष्ट्र राज्य में भव्य पैमाने पर मनाया जाता है।

भगवान गणेशजी की मूर्ति की शोभायात्रा बहुत खुशी, धूमधाम और भव्यता के साथ निकाली जाती है। भगवान गणेश की मूर्तियों को उनके पूजा स्थल से विसर्जन स्थल तक ले जाया जाता है। पर्यावरण संबंधी चिंताओं के कारण, आजकल गणेश की मूर्तियाँ कृत्रिम तालाबों में विसर्जित की जा रही हैं। इस तरह के विसर्जन को पर्यावरण के अनुकूल गणेश चतुर्थी त्योहार मनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

गणेश चतुर्थी के दिन गणेश पूजा पूरी होने के बाद गणेश विसर्जन का अनुष्ठान किया जा सकता है। हिंदू मान्यताओं के अनुसार, पूजा के अंत में अधिकांश देवता या हिंदू देवताओं के विसर्जन होते हैं। हालांकि, गणेश चतुर्थी के दिन गणपति विसर्जन इतना लोकप्रिय नहीं है और कुछ मामलों में किया जाता है।

जब गणेश चतुर्थी के त्योहार के शुरू होने के अगले दिन गणेश विसर्जन किया जाता है तब इसे डेढ़ दिन का गणेश विसर्जन कहा जाता है। इस समयावधि

में बड़ी संख्या में भक्त गणेश विसर्जन करते हैं। इस दिन दर्शन करने वाले भक्त आमतौर पर दोपहर में पूजा करते हैं और मध्याह्न के बाद वे विसर्जन के लिए गणेशजी की मूर्ति ले जाते हैं।

गणेश चतुर्थी के 7 वें, 5 वें या तीसरे दिन भी गणेश विसर्जन किया जा सकता है। 11 वें दिन यानी अनंत चतुर्दशी को गणेश विसर्जन करने के लिए सबसे पुण्य और शुभ दिन माना जाता है। अधिकांश स्थानों पर, सैकड़ों हजारों लोग उत्सव मनाने के लिए एक साथ आते हैं।

गणपति विसर्जन का महत्व

गणेश विसर्जन के माध्यम से यह माना जाता है कि भगवान गणेश अपने माता-पिता भगवान शिव और देवी पार्वती के साथ कैलाश पर्वत पर वापस जाते हैं। इस दिन भक्त भगवान की आध्यात्मिक और दिव्य उपस्थिति के लिए अपनी श्रद्धा अर्पित करते हैं। यह गणेशजी की यात्रा को 'अकार' से 'निराकार' तक मनाता है। हिंदू धर्म में यह एकमात्र त्योहार है जो सर्वशक्तिमान के दोनों रूपों - भौतिक रूप के साथ-साथ आध्यात्मिक रूप (निराकार) पर भी श्रद्धा व्यक्त करता है।

यह उत्सव जन्म, जीवन और मृत्यु के चक्र के महत्व को दर्शाता है और इस तथ्य पर जोर देता है कि जीवन में सब कुछ क्षणिक है। गणपति जी को अच्छी शुरुआत का देवता माना जाता है और माना जाता है कि वह विसर्जन के समय घर और परिवार की सभी बाधाओं को अपने साथ ले जाते हैं। यह शायद सबसे प्रमुख त्योहारों में से एक है जिसका समाज के हर वर्ग को बेसब्री से इंतजार रहता है। ❐

नारी का सम्मान करो

- सतीश कुमार सैन

दहेज लालची है समाज,
नारी ही सदा शिकार बनी।
लालच की खूनी कीचड़ में
नैतिकता क्यों हर बार सनी

क्यों खुलेआम लेते दहेज,
लेना-देना व्यापारों सा।
पावन विवाह का मण्डप भी
अब लगता है बाजारों सा

कब तक नारी के अरमानों
की चिता जलाई जाएगी
कब तक यूं नारी दहेज की
बलि चढ़ाई जाएगी।।

कोई उनसे जाकर पूछे
वो कैसे वंश चलाएंगे।

जब नहीं बेटियां ही होंगी
तो बहू कहां से लाएंगे।।

अपने समाज का ये थोथा
विश्वास बदलना ही होगा।
आगे आकर अब युवकों को,
इतिहास बदलना ही होगा।।

यों परंपरा की आड़ लिए,
अब मोलभाव को बंद करो
बढ़-बढ़ कर अपने बेटों की
यों सेल लगाना बंद करो।।

जो करना है उन्नत समाज
तो नारी का सम्मान करो।
ये माता, बहन, बहू, बेटी,
इनकी सेवा का मान करो। ❐

पितरों के प्रति आभार प्रकट करने का अवसर देता है 'पितृ-पक्ष'

■ अमरनाथ झा

पितृपक्ष शब्द पितृ और पक्ष का युग्म है जिसका शाब्दिक अर्थ, पितृ-पिता और पक्ष मतलब दो सप्ताह अथवा पन्द्रह दिन की कालगणना का खण्ड। इस हिसाब से पितरों के लिए निहित पंद्रह दिन के कालखण्ड को पितृपक्ष कहा गया है। हमारे धर्मग्रंथों में देवता के समकक्ष या समतुल्य पितरों के स्थान अथवा महत्व का वर्णन मिलता है। शास्त्रों में 'देवता-पितर' शब्द को इसी आशय के साथ परिभाषित भी किया गया है। अर्थात देवता ही हमारे पितर हैं या दूसरे शब्दों में कहें तो हम सब देवता की संतान हैं। वही हमारे पितर या पिता हैं, पूर्वज हैं। पितरों के कारण ही हमारा अस्तित्व है। अतः पितरों को भी देवता के समान ही सम्मान और स्थान हमारे वेद-पुराणों में वर्णित है।

हमारे पूर्वजों की त्याग तपस्या से ही हमारा मार्ग प्रशस्त होता है, उनके द्वारा अर्जित पुण्य प्रतापों का लाभ उनकी संतानों को ही मिलता है। आज जब वे इस दुनिया में नही हैं, उनके द्वारा किये गए हम पर अगणित उपकार के प्रति कृतज्ञता का भाव ही हमारा सम्बल बनता है। ईश्वर का साक्षात्कार हमें अपने माता-पिता के रूप में ही होता है। हम सीधे-सीधे ईश्वर को नहीं देख पाते परन्तु माता-पिता यानि कि हमारे पितर हमारे जीवित भगवान या ईश्वर हैं जिनके कारण हम इस संसार मे हैं। अतः माता-पिता को भगवान से भी ऊपर की श्रेणी प्राप्त है। कहा भी गया है: मातृदेवो भवः, पितृदेवो भवः। इस तरह से देवता ही पितर हैं और पितर ही देवता हैं।

पितरों के लिए हमारे शास्त्रों में विशेष पक्ष का विधान बताया गया है, जिसे पितृ पक्ष कहा गया है। आश्विन मास के आरम्भ में कृष्ण पक्ष के पन्द्रह दिन अथवा एक पक्ष को हमारे पितरों के प्रति आभार प्रकट करने के लिए 'पितृ-पक्ष' की व्यवस्था बनाई गई है। इस दौरान हम अपने पितरों को स्मरण करते हैं, उनका 'विशेष श्राद्ध' किया जाता है। मृत्यु के पश्चात् श्राद्ध के बाद प्रत्येक वर्ष पितृपक्ष के समय मृत्यु की तिथि के अनुसार हम अपने परिवार या कुल के दिवंगत पूर्वजों का 'विशेष श्राद्ध' करके उनसे आशीर्वाद लेते हैं।

यह बहुत ही पवित्र समय होता है जब हमारे पितरों की तर्पण विधि द्वारा पूजा की जाती है। उनके प्रति धन्यवाद एवं आभार प्रकट करने के लिए श्रद्धापूर्वक ब्राह्मण भोजन व निर्धन को दान आदि देकर पुण्य की प्रप्ति की जाती है। परन्तु पितृपक्ष का यह परम पवित्र पक्ष कुछ अल्पज्ञानी अथवा अज्ञानी लोगों के कारण 'श्राद्ध' या अशुभ समय के रूप में दुष्प्रचारित कर दिया गया है जो भ्रान्तिपूर्ण और सरासर गलत है। ऐसे अज्ञानियों के अनुसार पितृपक्ष को श्राद्ध कहकर उन पन्द्रह दिन के दौरान शुभ कार्य या कोई नया कार्य, नई वस्तु आदि के क्रय करने से मना किया

गया है जो सही नही है। इसके उलट सत्यता यह है कि पितृपक्ष का समय अत्यंत लाभकारी और शुभ फलदायी है। हो भी क्यों न क्योंकि उस दौरान हमारे पितर हमारे आसपास होते हैं, भला सोचिए ऐसे कौन से माता-पिता, या पितर होंगे जो अपनी संतानों की समृद्धि से प्रसन्न नही होंगे? सच तो यह है कि उन दिनों में यदि घर मे कोई शुभ कार्य हो तो हमें अपने पितरों का भी आशीर्वाद मिलेगा जिससे हमारा कार्य और सफल होगा।

आज के समय में पितृपक्ष की प्रासंगिकता और भी बढ़ गयी है। हम जन्म लेते हैं, शिशु से बालक, किशोर, युवा, प्रौढ़, वृद्धावस्था आदि के मार्ग से चलकर हम मृत्यु को प्राप्त करते हैं। सत्य सनातन संस्कृति में मृत्यु को एक उत्सव माना गया है, जो आत्मा को एक जीर्ण-शीर्ण काया से मुक्त होकर नवीन काया में प्रविष्टि का कारक व माध्यम है। मृत्यु के पश्चात् आत्मा नवजीवन को वरण करती है। अतः यह उदासी नहीं, बल्कि नव उल्लास का द्योतक होता है। हमारी अधिकांश नई पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति के दुष्प्रभाव में अपने सत्य सनातन संस्कृति से विस्मृत व विमुख है। अपने पूर्वजों के प्रति, अपने माता-पिता के प्रति कृतज्ञता का भाव लुप्तप्राय अवस्था में है। उस पर से हमारे समाज को विखण्डित करने वाली मानसिकता के लोग जो हमारी संस्कृति को विद्रूपित करने में लगे हुए हैं। हमारे गौरवशाली इतिहास को तोड़-मरोड़कर, हमारी पौराणिक कथाओं को मिथक कहकर और हमारी मान्यताओं और परंपराओं का उपहास करते हैं।

हमारे त्योहारों, अनुष्ठानों को अंधविश्वास से जोड़कर उसे पाखण्ड बताते हैं। जबकि यह साबित हो चुका है और विज्ञान ने भी स्वीकार किया है कि सत्य सनातन धर्म और इसकी परंपराओं-मान्यताओं का वैज्ञानिक आधार है। यह सब अवैज्ञानिक नही है। ऐसे समय में हमारे युवा, हमारी नई पीढ़ी को इन सबसे अवगत कराना परम आवश्यक है। जब तक हम अपने पूर्वजों का सम्मान नही करेंगे हम अपनी आने वाली पीढ़ी का भविष्य नहीं संवार सकते। आज की पीढ़ी में बुजुर्गों के सम्मान करने की संस्कृति का आरोपण करना अत्यंत आवश्यक है। कल वह भी उस अवस्था मे होंगे। उनका सम्मान भी कौन करेगा? यह जीवन चक्र अद्भुत है। आप जैसा बोते हैं वहीं काटते हैं। आपका किया आप तक लौटकर आता है। आप आज अपने बड़ों का सम्मान करेंगे कल आपका सम्मान होगा। आज आप उनका सम्मान नहीं करते हैं, कल यह सब आपके साथ भी होगा। अपने बड़ों, बुजुर्गों, पूर्वजों, पितरों के प्रति कृतज्ञ भाव से श्रद्धापूर्वक आभार प्रकट करने का पक्ष ही है 'पितृ-पक्ष'। ❐

(लेखक सेवा भारती, रामकृष्णपुरम विभाग के मंत्री हैं)

- **व्यस्त आदमी के पास आंसू बहाने का समय नहीं होता।**

  – बायरन

- **ईर्ष्या करने वाला घृणा करने वाला, असंतोषी, क्रोधी, सदा शंकित रहने वाला और दूसरों के भाग्य पर जीवन निर्वाह करने वाला ये छः सदा दुखी रहते हैं।**

  – विदुरनीति 1/95

- **दुःख को दूर करने के लिए सबसे अच्छी दवा यही है कि उसका चिंतन छोड़ दिया जाए, क्योंकि चिंतन से वह सामने आता है और अधिकाधिक बढ़ता रहता है।**

  – वेदव्यास

थैलासीमिया और उससे बचाव के उपाय

■ डॉ. वीणा सिंघल

यह माता-पिता द्वारा बच्चों को मिलने वाला रक्त रोग है। इस रोग में ही मोग्लोबिन बनने में गड़बड़ी के कारण खून की कमी हो जाती है। यह दो प्रकार की होती है-थैलासीमिया मेजर और थैलासीमिया माइनर। माता-पिता दोनों के माइनर बीमारी से ग्रसित होने की अवस्था में बच्चे को मेजर बीमारी होने की संभावना 25 प्रतिशत रहती है। इस बीमारी में हीमोग्लोबिन की ..पार्ट के निर्माण की प्रक्रिया में .....आ जाती है जिसके कारण लाल रक्त से नष्ट होती है। मेजर बीमारी में की काफी ज्यादा कमी होती है और ज्यादातर एक वर्ष तक की उम्र के बच्चों में बीमारी के लक्षण आ जाते हैं। खून की कमी के कारण बार-बार रक्त चढ़ाना पड़ता है जिससे शरीर में लौह तत्व की मात्रा बढ़ जाती है और वह हृदय, यकृत, गुर्दे इत्यादि में पहुंचकर नुकसान पहुंचाता है।

माइनर टाइप में मामूली खून की कमी होती है और अधिकतर लोग सामान्य जीवन गुजारते हैं। पूर्ण सी.बी.सी. और हीमोग्लोबिन इलैक्ट्रोफोरेसिस जांच द्वारा इसका पता लग सकता है। मेजर बीमारी का इलाज काफी मुश्किल और महंगा है। पूर्ण इलाज के बावजूद सामान्य जिन्दगी सम्भव नही है। इसमें नियमित समय के बाद (ज्यादातर लोगों में प्रति मास या और जल्दी) खून चढ़ाकर हीमोग्लोबिन 11.0 से 12.0 ग्राम के करीब रखने का प्रयास करते हैं। शरीर में बढ़ते लौह को कम करने के लिये कलेटिंग एजन्टस या डेसोरल इन्जेक्शन दिये जाते हैं जो काफी महंगा और कष्टदायी होता है। बोन मैरो ट्रांस्पलांट से बीमारी का पूर्ण निदान सम्भव है, किन्तु यह काफी कम स्थानों पर उपलब्ध है और अत्यधिक महंगा है।

बचाव के तरीके: विवाह से पूर्व महिला और पुरुष की थैलासीमिया माइनर के लिये जांच करायें और दोनों के माइनर से ग्रसित होने पर शादी न करें। गर्भावस्था में माँ की माइनर टाइप के लिये जल्दी जांच करें और माँ के पोजिटिव होने की स्थिति में पिता की भी जांच करें। दोनों के माइनर पोजिटिव होने पर कोरियोन के टुकड़े की जांच से बच्चे के थैलासीमिया मेजर होने की जानकारी मिल सकती है। ऐसी अवस्था में गर्भपात द्वारा इस खतरनाक बीमारी से पीड़ित बच्चे से बचें। ❐

सेवा करने से बीमारी से मिली मुक्ति

मैं सेवा भारती से 3 साल पहले जुड़ी थी। सेवा भारती से जुड़ने से पहले मैं डिप्रेशन की दवाई लगातार खा रही थी और मेरी इस बीमारी से मेरे परिवार के सभी लोग काफी परेशान हो चुके थे। तब मेरे पति ने सुनीता मौर्या जी से बात कर मुझे कम्प्यूटर टीचर के रूप में सेवा भारती से जोड़ा। मैंने अपने आपको घर के माहौल से निकाल कर बाहर सेवा भारती में समय देना शुरू किया । रोज 2 घंटे की क्लास लेने से मन से नकारात्मक सोच समाप्त होने लगी। दवाइयां भी काफी कम होने लगीं, पर अचानक आई कोरोना नामक बीमारी से सभी केन्द्र बन्द हुए। फिर वही समय। सिर्फ घर से कार्य करने से मन उदास रहने लगा,पर आपातकालीन समय में सेवा के कार्यों को करने का मौका मिला। हमने लोगों में राशन की किट का वितरण किया। काढ़े के पैकेट लोगों के घरों पर पहुंचाए। कोरोना काल में भी सेवा भारती के जरिए हम और हमारा परिवार सेवाओं से जुड़ा रहा। बहुत अच्छा महसूस होता है।

– **निर्मला** (कम्प्यूटर शिक्षिका, माधव सेवा केन्द्र, 32 ब्लॉक, त्रिलोकपुरी)

'निक्कर है पहचान हमारी'

■ रचना शास्त्री

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक श्री रणवीर गुप्ता जी अब 85 वर्ष पार कर चुके हैं। अब भी रोज निक्कर में शाखा जाते हैं। फिर इसी पोशाक में सेवा भारती के लिए दान लेने निकल लेते हैं। उस दिन गुप्ता जी शाखा से ही शाहदरा की सब्जी मंडी जा पहुंचे। सब्जी खरीद रहे थे, तभी एक मुस्लिम सब्जी वाले ने कहा-आप इस उम्र में भी निक्कर क्यों पहनते हैं! गुप्ता जी बिना कुछ कहे आगे चले गए। थोड़ी देर में वही फिर मिल गया। एक बार फिर पूछा बैठा-आपने निक्कर क्यों पहना है! रणबीर गुप्ता जी ने ऊंची आवाज में कहा- तुमने ये टोपी क्यों पहनी है! वह बोला -गोल टोपी हमारी पहचान है। गुप्ता जी बोले -निक्कर हमारी भी पहचान है। इसी प्रकार एक बार गुप्ता जी कैनरा बैंक रुपए निकालने गये। लाइन में खड़े हो गए। निक्कर ही पहने हुए थे। एक कर्मचारी ने पूछ ही लिया। क्या आप संघ शाखा में जाते हैं? उन्होंने कहा- हां जी, पर अब मुझे सेवा भारती में दान संग्रह का दायित्व दिया गया है। फिर तो परिचय हो गया। कुछ दिन में घनिष्ठ मित्र बन गये। रणवीर जी के साथ जाकर सेवाधाम भी देखा और नियमित दानदाता भी बने। है न निक्कर का चमत्कार।

शिवाजी पार्क संघ स्थान के निकट ही कुछ बुजुर्ग सैर करने आते। कभी वो शाखा के खेल देखने में आनन्द लेते। एक दिन वो पूछने लगे- आप इतने बड़े बूढ़े होकर निक्कर क्यों पहनते हैं। गुप्ता जी बोले, ये हमारी पहचान है तथा सुविधाजनक भी है। फिर रोज नमस्ते होने लगी। दो सज्जन सेवा भारती के लिए दान देने लगे।

दो महीने पहले ही रणवीर जी आगरा किसी पारिवारिक कार्यक्रम में भाग लेने गए। प्रातः काल ही निक्कर पहनकर चले शाखा तलाश करने। सड़क किनारे पैदल ही जा रहे थे और तभी एक कार उनके पास आकर रुकी। अन्दर बैठे सज्जन ने पूछा, क्या आप संघ के कार्यक्रम में जा रहे हैं! गुप्ता जी बोले हां जी। जबकि उन्हें कार्यक्रम की जानकारी नहीं थी। उन्होंने कार में बिठा लिया गया। कार्यक्रम संपन्न होने पर परिचय हुआ। दिल्ली से आए हैं तो वे गुप्ता जी को अपने घर ले गए। वे जिला संघचालक थे। सेवा भारती की जानकारी मिली तो उन्होंने भी दान दिया।

रणवीर जी के दामाद जी के संपर्क से डाक्टरों की एक टीम एकत्रित हुई। वे भी कभी किशोर अवस्था में शाखा जाया करते थे। साथ बढ़िया अल्पाहार किया और सेवा भारती के लिए दान भी प्राप्त हुआ। उन डाक्टरों को दिल्ली आने और सेवाधाम दिखाने के लिए निमंत्रण भी दे दिया। ये है निक्कर का कमाल। रणवीर गुप्ता जी बताते हैं कि शाखा के बाद भी निक्कर पहनने की प्रेरणा उन्हें स्वर्गीय रोहिताश्व जी रस्तोगी से मिली थी। वे भी शाखा से घर लौटते हुए ग्यारह बजा लेते थे। जो भी मिला उसी से संघ चर्चा। निक्कर परस्पर प्यार और विश्वास का बड़ा आधार है। ❐

'ऊँ' उच्चारण के लाभ

■ प्रतिनिधि

हमारे पूर्वजों ने हमें जो ज्ञान और परम्परा दी है, उस पर ही हम चल सकें तो जीवन की अनेक समस्याएं स्वत: ही समाप्त हो जाएंगी। हमारे पूर्वजों ने बताया कि ऊँ का उच्चारण करो और अनेक बीमारियों से मुक्त रहो। वास्तव में ऊँ तीन अक्षर से बना है- अ उ म्। 'अ' का अर्थ है उत्पन्न होना। 'उ' का तात्पर्य है उठना, उड़ना अर्थात् विकास और 'म' का मतलब है मौन हो जाना अर्थात् 'ब्रह्मलीन' हो जाना। ऊँ सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति और पूरी सृष्टि का द्योतक है। ऊँ का उच्चारण शारीरिक लाभ प्रदान करता है।

उच्चारण की विधि

प्रात: उठकर पवित्र होकर ओंकार ध्वनि का उच्चारण करें। ऊँ का उच्चारण पद्मासन, अर्धपद्मासन, सुखासन, वज्रासन में बैठकर कर सकते हैं। इसका उच्चारण 5, 7, 10, 21 बार अपने समयानुसार कर सकते हैं। ऊँ जोर से बोल सकते हैं, धीरे-धीरे बोल सकते हैं। ऊँ जप माला से भी कर सकते हैं।

ऊँ और थायरॉयड

ऊँ का उच्चारण करने से गले में कंपन पैदा होती है जो थायरायड ग्रंथि पर सकारात्मक प्रभाव डालता है।

ऊँ और घबराहट

अगर आपको घबराहट या अधीरता होती है तो ऊँ के उच्चारण से उत्तम कुछ भी नहीं।

ऊँ और तनाव

यह शरीर के विषैले तत्त्वों को दूर करता है, अर्थात् तनाव के कारण पैदा होने वाले द्रव्यों पर नियंत्रण करता है।

ऊँ और रक्त का प्रवाह

यह हृदय और रक्त के प्रवाह को संतुलित रखता है।

ऊँ और पाचन

ऊँ के उच्चारण से पाचनशक्ति तेज होती है।

ऊँ लाए स्फूर्ति

इससे शरीर में फिर से युवावस्था वाली स्फूर्ति का संचार होता है।

ऊँ और थकान

थकान से बचाने के लिए इससे उत्तम उपाय कुछ और नहीं।

ऊँ और नींद

नींद न आने की समस्या इससे कुछ ही समय में दूर हो जाती है। रात को सोते समय नींद आने तक मन में इसको करने से निश्चिंत नींद आएगी।

ऊँ और फेफड़े

कुछ विशेष प्राणायाम के साथ इसे करने से फेफड़ों में मजबूती आती है।

ऊँ और रीढ़ की हड्डी

ऊँ के पहले शब्द का उच्चारण करने से कंपन पैदा होती है। इन कंपन से रीढ़ की हड्डी प्रभावित होती है और इसकी क्षमता बढ़ जाती है।

ऊँ दूर करे तनाव

ऊँ का उच्चारण करने से पूरा शरीर तनाव-रहित हो जाता है। ❐

भगवान श्रीकृष्ण का न्याय

■ आदित्य नारायण झा 'अनल'

कृष्ण और बलराम दो भाई हैं। सारे जीवन परछाई की तरह साथ रहे, लेकिन पांडव-कौरवों में क्या चल रहा है, ये बलराम कभी नहीं समझ पाए। उन्होंने दुर्योधन को गदा सिखाई फिर अपनी बहन सुभद्रा का विवाह दुर्योधन से करना चाहा। बाद में अपनी बेटी का विवाह दुर्योधन के बेटे से करना चाहा।

कृष्ण हर बार कैसे न कैसे वीटो लगाते रहे। जब तय हो गया कि पांडव और कौरवों में युद्ध होगा, तब बलराम तीर्थ करने चले गए और तब लौटे जब भीमसेन दुर्योधन की जांघ तोड़ रहा था। इस पर बलराम क्रोधित हो गए। कहते हैं कि जो कुछ भी संसार में है, वो सब कुछ महाभारत में है। महाभारत के बलराम जी का चरित्र आपको आंख पर पट्टी बांधे सेक्युलर हिन्दुओं की याद दिलाता है जो लक्षागृह से लेकर अभिमन्यु वध तक कुछ नहीं बोलते, लेकिन भीम द्वारा नियम तोड़कर दुर्योधन पर वार करते ही भड़क जाते हैं। सब कुछ सामने होकर भी उन्हें कुछ नहीं दिखता, वो निरपेक्ष रहते हैं और उनकी यह निरपेक्षता असुरी शक्तियों को मौन समर्थन का काम करती है। लेकिन कृष्ण का पक्ष है पहले दिन से ही। वे दुर्योधन को उस स्तर पर ले आते हैं जहां वह बोल दे कि 'सुई के बराबर जमीन भी नहीं दूंगा'... ताकि ये घोषित और साबित हो जाए कि ये सत्ता का युद्ध नहीं है, अस्तित्व की लड़ाई है, इसे आधुनिक शब्दावली में 'एक्सपोज' करना कहते हैं।

वे शांतिदूत बनकर जाते हैं लेकिन समय आने पर युद्ध छोड़ कर भाग रहे अर्जुन को गीता का ज्ञान देकर युद्ध करने के लिए प्रेरित करते हैं। शांति समझौता न्याय को ताक पर रख कर नहीं किया जा सकता। न्याय साबित करने के लिए हिंसा होती है तो हो जाए।

सेकुलर हिन्दू समाज पूजता है कृष्ण को, लेकिन बर्ताव बलराम जैसा करता है, जिसे अपने ऊपर हमला करना वाले जरासंध तो दिखते हैं, लेकिन द्रौपदी के वस्त्रों तक पहुंचने वाले कौरव खराब नहीं लगते, क्योंकि दुर्योधन से लगाव है। आम हिन्दू अर्जुन का प्रतीक है। वह क्या सही गलत में इतना उलझा है कि अंत में धनुष छोड़कर खड़ा हो जाता है। इसीलिए शायद अर्जुन को गीता में भारत कह कर भी संबोधित किया गया है। अर्जुन बनने का लाभ तब ही है जब आपके पास कृष्ण जैसा सारथी हो। जो आपके सारे महान विचार जानने के बाद सीधे सपाट शब्दों में ये बोले- अर्जुन- हे मधुसूदन! इन्हें मारकर और इतनों को मार कर तीनों लोकों का राज्य भी मिले तो भी नहीं चाहिए, फिर पृथ्वी के तो कहने ही क्या?

कृष्ण- यदि तू इस धर्म के लिये युद्ध नहीं करेगा तो अपनी कीर्ति को खोकर कर्तव्य-कर्म की उपेक्षा करने पर पाप को प्राप्त होगा। लोग सदैव तेरी बहुत समय तक रहने वाली अपकीर्ति का भी वर्णन करेंगे

और सम्मानित मनुष्य के लिए अपकीर्ति मृत्यु से भी बढ़ कर है। और अंत में सिर्फ एक उद्घोष रह जाएगा... 'न दैन्यं न पलायनम्।'

दुर्योधन ने उस अबला स्त्री को दिखा कर अपनी जंघा ठोकी थी, तो उसकी जंघा तोड़ी गयी। दु:शासन ने छाती ठोकी तो उसकी छाती फाड़ दी गयी। महारथी कर्ण ने एक असहाय स्त्री के अपमान का समर्थन किया तो श्रीकृष्ण ने असहाय दशा में ही उसका वध कराया। भीष्म ने यदि प्रतिज्ञा में बंध कर एक स्त्री के अपमान को देखने और सहन करने का पाप किया, तो असंख्य तीरों में बिंध कर अपने पूरे कुल को एक-एक कर मरते हुए भी देखा। भारत का कोई बुजुर्ग अपने सामने अपने बच्चों को मरते देखना नहीं चाहता, पर भीष्म अपने सामने चार पीढ़ियों को मरते देखते रहे। जब-तक सब देख नहीं लिया, तब-तक मर भी न सके। यही उनका दण्ड था। धृतराष्ट्र का दोष था पुत्रमोह, तो सौ पुत्रों के शव को कंधा देने का दण्ड मिला उन्हें। दस हजार हाथियों के बराबर बल वाला धृतराष्ट्र सिवाय रोने के और कुछ नहीं कर सका। दण्ड केवल कौरव दल को ही नहीं मिला था। दण्ड पांडवों को भी मिला। द्रौपदी ने वरमाला अर्जुन के गले में डाली थी, सो उनकी रक्षा का दायित्व सबसे अधिक अर्जुन पर था। अर्जुन यदि चुपचाप उनका अपमान देखते रहे, तो सबसे कठोर दण्ड भी उन्हीं को मिला। अर्जुन पितामह भीष्म को सबसे अधिक प्रेम करते थे, तो कृष्ण ने उन्हीं के हाथों पितामह को निर्मम मृत्यु दिलाई। अर्जुन रोते रहे, पर तीर चलाते रहे। क्या लगता है, अपने ही हाथों अपने अभिभावकों, भाइयों की हत्या करने की ग्लानि से अर्जुन कभी मुक्त हुए होंगे क्या? नहीं! वे जीवन भर तड़पे होंगे। यही उनका दण्ड था।

युधिष्ठिर ने स्त्री को दाव पर लगाया, तो उन्हें भी दण्ड मिला। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी सत्य और धर्म का साथ नहीं छोड़ने वाले युधिष्ठिर ने युद्धभूमि में झूठ बोला और उसी झूठ के कारण उनके गुरु की हत्या हुई। यह एक झूठ उनके सारे सत्यों पर भारी रहा। धर्मराज के लिए इससे बड़ा दण्ड क्या होगा? दुर्योधन को गदा युद्ध सिखाया था स्वयं बलराम ने। एक अधर्मी को गदा युद्ध की शिक्षा देने का दण्ड बलराम को भी मिला। उनके सामने उनके प्रिय दुर्योधन का वध हुआ और वे चाह कर भी कुछ न कर सके।

उस युग में दो योद्धा ऐसे थे जो अकेले सबको दण्ड दे सकते थे, कृष्ण और बर्बरीक। पर कृष्ण ने ऐसे कुकर्मियों के विरुद्ध शस्त्र उठाने तक से इंकार कर दिया और बर्बरीक को युद्ध में उतरने से ही रोक दिया। लोग पूछते हैं कि बर्बरीक का वध क्यों हुआ? यदि बर्बरीक का वध नहीं हुआ होता तो द्रौपदी के अपराधियों को यथोचित दण्ड नहीं मिल पाता। कृष्ण युद्धभूमि में विजय और पराजय तय करने के लिए नहीं उतरे थे, कृष्ण कृष्णा के अपराधियों को दण्ड दिलाने उतरे थे।

कुछ लोगों ने कर्ण का बड़ा महिमामण्डन किया है। पर सुनिए! कर्ण कितना भी बड़ा योद्धा क्यों न रहा हो, कितना भी बड़ा दानी क्यों न रहा हो, एक स्त्री के वस्त्र-हरण में सहयोग का पाप इतना बड़ा है कि उसके समक्ष सारे पुण्य छोटे पड़ जाएंगे। द्रौपदी के अपमान में किये गये सहयोग ने यह सिद्ध कर दिया कि वह महानीच व्यक्ति था और उसका वध ही धर्म था। 'स्त्री कोई वस्तु नहीं कि उसे दांव पर लगाया जाय।' कृष्ण के युग में दो स्त्रियों को बाल से पकड़ कर घसीटा गया। देवकी के बाल पकड़े कंस ने और द्रौपदी के बाल पकड़े दु:शासन ने। श्रीकृष्ण ने स्वयं दोनों के अपराधियों का समूल नाश किया।

किसी स्त्री के अपमान का दण्ड अपराधी के समूल नाश से ही पूरा होता है, भले वह अपराधी विश्व का सबसे शक्तिशाली व्यक्ति ही क्यों न हो। स्त्री का अपमान स्वीकार नहीं। यही भगवान श्रीकृष्ण का न्याय था। ❐

(साभार सोशल मीडिया)

वर्तमान का एक अद्‌भुत दानवीर पल्लामी कल्याण सुन्दरम्

■ धनंजय धीरज

प्राचीन दानवीरों की कहानियाँ लिखते लिखते विचार आया कि अपने देश और विदेशों में वर्तमान काल में भी अनेक दानवीर हैं। इसी दुविधा में था कि अपने ही देश के एक अद्‌भुत व्यक्ति का पता चला जो अभी जीवित है और मेरी ही वय के है। उसका जन्म भी भारत (चैन्नई) में 1940 में ही हुआ। उनका नाम है पल्लामी कल्याण सुन्दरम। उनके पिता जी का स्वर्गवास हो गया था अत: गरीबी में ही जैसे तैसे पढ़े लिखे। माता जी को ही वे अपना सर्वस्व मानते रहे। उनकी पूज्या माताजी ने उन्हें तीन शिक्षाए दीं।

1. लालच कभी मत करना।
2. जो भी कमाना उसका 10% दान अवश्य करना।
3. दिनभर में एक कार्य ऐसा अवश्य करना जिससे किसी गरीब के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ जाए।

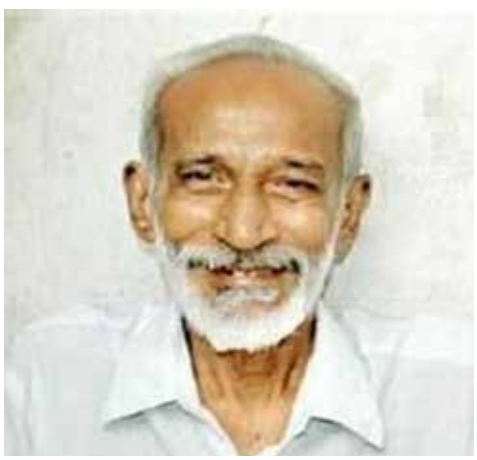

कल्याण सुन्दरम् ने माता जी के तीनो उपदेशों का पालन जीवन भर करने का संकल्प लिया। पढ़ते समय तथा नौकरी करते समय इन्होंनें पूरी निष्ठा से इन्हें अपने आचरण में उतारा।

1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया। इनदिनों भारत के प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरु थे। जिन्होंनें पंचशील समझौता कर के अपनी सेनाओं के आधुनिकीकरण की आवश्यकता पर ध्यान नहीं दिया। फिर उन्होंनें राष्ट्रीय रक्षाकोष में दान देकर सहयोग करने के लिए जनता को आह्‌वान किया। यहीं से शुरु होती है पल्लामी कल्याण सुन्दरम् की ख्याति कथा। बाईस वर्ष के कल्याण सुन्दरम् ने अपने गले की सोने की चेन वहाँ के मुख्यमंत्री कामराजजी को उतार कर अर्पण कर दी। कामराजजी ने उनका सार्वजनिक सभा में सम्मान किया।

पल्लामी कल्याण सुन्दरम् ने 1963 में नौकरी शुरु की। एक महाविद्यालय (कॉलेज) में लायब्रेरियन के पद पर रहे। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि सुन्दरम् अपना पूरा का पूरा मासिक वेतन दान कर देते थे। एक छोटे से कमरे में रहते और वेतन में से अपने भोजन योग्य रुपये भी नहीं रखते। भोजन के लिए एक भोजनालय में वेटर का काम करते। वहीं पर उनका भोजन हो जाता। 1990 में उन्हें एकलाख रुपय की राशि प्राप्त हुई, वह भी गरीबों में बाँट दी गई। 1998 में पैंतीस वर्ष की नौकरी के पश्चात् सेवा निवृत्त हुए। उस समय उन्हें दस लाख रुपय मिले। यदि चाहते तो अपने बुढ़ापे के गुजारे के लिए उन्हें रख लेते परन्तु कल्याण सुन्दरम ने गरीबों के कल्याण के लिए यह धनराशि भी दानकर दी।

एक समाचार पत्र में इनका यह समाचार प्रकाशित हुआ तब संसार को पता चला कि संसार में ऐसा भी कोई व्यक्ति है जिसने जीवन भर कमाया परन्तु कभी बैंक में या अपने हाथ में एक रुपया भी नहीं रखा। आज भी वह एक छोटे कमरे में रहते हैं। अपने भोजन प्रबंध के लिए परिश्रम करते हैं। जीवन की सम्पूर्ण कमाई वह दान कर चुका है। संयुक्त राष्ट्र ने उनको अपने युग का सर्व प्रमुख व्यक्ति माना है। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय ने इन्हें अपने समय का अनुपम व्यक्ति माना है। फिल्मी हस्ती रजनीकान्त ने इनसे मिलकर इन्हें अपना पिता माना और

निवेदन किया कि मेरे पिता बनकर मेरे पास आकर मेरे निवास पर रहे ताकि मै आपकी सेवा कर सकूँ। परन्तु कल्याण सुन्दरम् ने अस्वीकार कर दिया। एक बार जब बिल क्लिंटन भारत आए तो उन्होंने इनसे मिलने की इच्छा व्यक्त की परन्तु भारत सरकार ने इसकी व्यवस्था करने में असमर्थता व्यक्त कर दी।

अमेरिका की ही एक संस्था ने इनको सम्मानित करके 30 करोड़ की बड़ी धनराशि भेंट की। बुढ़ापे की अवस्था में भी उन्होंनें इतनी बड़ी राशि में से एक पैसा भी अपने पास नहीं रखा तथा अनाथ बच्चों के कल्याण के लिए समूची राशि दान कर दी। ये अभी जीवित हैं तथा एक छोटे कमरे में सादा जीवन जी रहे हैं। समस्त भारत की जनता को कल्याण सुन्दरम के भारतीय होने का गर्व है। ❐

हमेशा सीखते रहना चाहिए

किसी गांव में एक कारीगर रहता था जिसका एक लड़का था। कारीगर अपनी छोटी सी झोपड़ी में टोकरी बनाता था जिन्हें वह 20-20 रूपये में बेचा करता था। अब कारीगर बूढ़ा हो चुका था उसने सोचा कि मैं अपने बेटे को यह टोकरी बनाने का काम सिखाता हूं लड़के से कहा कि तुम उसे सीख लो मैंने तुम्हारे दादा जी से सीखा है। ये हमारी पीढियों से चला आ रहा काम है।

अच्छा काम हैं। लड़का भी मान गया टोकरी बानने का काम सीखने को। पिताजी ने लड़का को टोकरी बनानी सिखायी और उसे बाजार में बेचकर आने को कहा। लड़का टोकरी को लेकर बाजार गया। और बेचकर आया ही था पिताजी ने पूछा कि उदास क्यों हो। लड़का बोला कि मेरी बनाई हुई टोकरी केवल दस रूपये में ही बिकी। पिताजी ने कहा चलो कोई बात नही आज तुम्हें और अच्छी टोकरी बनाना सिखाता हूँ।

पिताजी ने और अच्छी टोकरी बनाना सिखाई और उसे बाजार में बेचने को कहा। लड़का टोकरी लेकर बाजार गया और अपनी बनाई टोकरी को पंद्रह रूपये में बेचकर आया। लड़का अब भी उदास था। पिताजी ने फिर उदासी का कारण पूछा तो लड़के ने कहा कि टोकरी केवल पंद्रह रूपये में ही बिकी। पिताजी ने कहा कोई बात नही धीरे धीरे तुम्हारी बनाई हुई टोकरी अच्छे दामों में बिकने लगेगी तुम अच्छे से टोकरी बनाना सिखते रहो। पिताजी ने और अधिक अच्छी टोकरी सिखाई और टोकरी बनाकर बेचने को कहा। लड़का बाजार गया और उस दिन उसकी टोकरी 30 रूपये में बिक गई। लड़का बहुत खुश हुआ। पिताजी ने पूछा कि आज कितने रूपये की टोकरी बेची। लड़के ने कहा आज मेरी बनाई टोकरी 30 रूपये की बिकी हैं।

पिताजी ने यह सब सुनकर लड़के से कहा बहुत अच्छा है। चलो आज तुम्हें ऐसी टोकरी सिखाऊंगा जो 40 रूपये में बिक सके। लड़के ने कहा बस पिताजी आप खुद 20 रूपये की टोकरी बेचते आये हो आप मुझे 40 की टोकरी बनाना कैसे सिखाओगे। आप रहने दो आपसे ज्यादा रूपये की टोकरी तो मैं बनाना जानता हूँ। इतना सुनकर पिताजी ने कहा ऐसा ही कुछ मैने भी कहा था जब मेरे पिताजी खुद 15 रूपये की टोकरी बेचते थे और एक दिन मेरी टोकरी 20 रूपये में बिक गयीं। मेरे पिताजी ने मुझे 25 रूपये की टोकरी सिखाने को कहा था तो मैने भी सिखने के लिए मना कर दिया था।

और कहा था कि आप खुद 15 की बेचते आये हैं। आपसे ज्यादा की तो बेचकर आया हूँ। और तब से जीवन भर बीस रूपये की ही टोकरी बेचता रहा क्योंकि उससे ज्यादा की टोकरी मैं सीख ही नहीं पाया।

ये कहानी हमें सिखाती है कि हमें थोड़ा सा सीखने पर यह घमंड नहीं होना चाहिए कि अब मैं सब कुछ जानता हूँ। क्योंकि ऐसा हो सकता है कि हर कोई कुछ ना कुछ आपसे अधिक जानता हो। हमें हमेशा कुछ ना कुछ सीखते रहना चाहिए। ❐

कमला की विदाई

■ आचार्य मायाराम 'पतंग'

मोहन लाल को दुबारा विवाह करना ही पड़ा। उसकी माँ, चाची और बहनों ने ही नहीं, रिश्तेदारों तथा पड़ोसियों ने भी मोहन लाल पर भारी दबाव डाला तो वह विवश हो गया। उनका कहना भी ठीक था कि कमला बेटी अभी तीन वर्ष की अबोध बालिका है। मोहन लाल उसका पालन-पोषण कैसे कर पाएगा? माँ कहती भी थी-पता नहीं मैं सालभर भी जीवित रहूंगी या नहीं। बहन अपनी ससुराल का घर देखेगी। इस बेचारी बच्ची को कौन देखेगा? इसका लालन-पालन कौन करेगा? ये अपनी जरुरतें और इच्छाएँ किससे कहेगी? बेटा! विवाह तो करना ही पड़ेगा। फिर तेरी भी तो पूरी जिन्दगी पड़ी है। अकेले कैसे कटेगी? माँ के सामने मज़बूर मोहन लाल ने हाँ कर दी। रिश्ते तो रोज़ आ ही रहे थे। एक रिश्ता आया वो गाड़ी देने को तैयार थे पर दो बहनों को विवाह साथ करना चाहते थे। मोहन बोला-छोटा अभी पढ़ रहा है उसे विवाह के बंधन में बाँधकर भविष्य नष्ट नहीं कर सकते। फिर मैंने तो दहेज का समर्थन पहले भी नहीं किया। सोमवती के पिता से भी मैंने कोई दहेज नहीं लिया था। एक रिश्ता बड़ी भाभी की फुफेरी बहन का भी आया। मोहनलाल को उसका मज़ाकिया स्वभाव ही पसन्द नहीं था। भाभी इस बात से नाराज़ भी हो गई। माँ ने आदेश कर दिया, ''अब ज्यादा मीन-मेख मत निकाल, जो भी आए, कर-कराके काम पूरा कर।''

आखिर मोहन का विवाह हो गया। रजनी की दसवी तक शिक्षा हो चुकी थी। रजनी की चार बहनें थीं। भाई कोई नहीं था। मोहन लाल को लगा बिना भाई की लड़की का रिश्ता लेना भी, दहेज ना लेने की तरह समाज सुधार का एक कदम है।

कमला को मम्मी मिल गई। उसे अच्छा लगा। रजनी को घर की रसोई का काम तो सँभालना ही था। परन्तु आते ही मम्मी बनना उसे नहीं आया। कमला को आस-पड़ौस की महिलाएँ पूछतीं-अरी कमला! तेरी नई मम्मी तुझे मारती तो नहीं। कोई कहती- ''बेटी, खाना तो समय पर देती है ना'' कोई कहती- ''तंग तो करती होगी, कमला बताती नहीं है।'' कमला जैसे-जैसे बड़ी हो रही थी, वैसे-वैसे उसकी बुद्धि बढ़ रही थी। उसे एहसास हो गया था कि उसकी मम्मी तो मर चुकी। यह मम्मी उसकी नहीं है। फिर उसके अपनी बेटियाँ हुई बेटा हुआ। तब तक कमला विवाह योग्य हो गई। दसवीं पास कर चुकी थी, अठारह वर्ष पूरे हुए थे कि दिल्ली से एक रिश्ता आया।

मोहनलाल पर परिवार और रिश्तेदारों का दबाव था। सभी चाहते थे कमला की शादी जल्दी कर दी जाए। मोहन चाहता था कमला को खूब पढ़ाना। रजनी ने भी दबाव डाला। जिम्मेदारी से जितनी जल्दी निपटा जाए उतना अच्छा है।

एक शुभ मुहूर्त देखकर विवाह कर दिया गया। लड़के वालों को लगा। ससुराल आगरा में हो गई है। कभी भी जाओ। ताजमहल और लाल किला देखो। पंछी का पेठा खाओ और घर के लिए भी ले आओ। इधर मोहन लाल को लगा कि राजधानी दिल्ली में रिश्तेदारी बन रही है, यह हमारा सौभाग्य ही है। है तो वो भी भरतपुर के परन्तु अब तो दिल्लीवासी है। कमला और शम्भू का विवाह बहुत धूमधाम से हुआ। मौहल्ले, पड़ौस के सभी परिवारों ने कमला को प्रेम और आत्मीयता से विदा किया। कमला दिल्ली वाली हो गई।

पुरानी दिल्ली सब्जी मंडी घंटाघर के पास था शम्भू नाथ का पैतृक घर। घर में केवल दो ही कमरे थे। शम्भू के माता-पिता राम के प्यारे हो चुके थे। बड़े भाई-भाभी को ही माता-पिता मानता था क्योंकि उन्होंने ही उसे पाला और पढ़ाया था। तीस हजारी

न्यायालय में वरिष्ठ वकील का मुंशी लगवाया था। कुल मिलाकर एक सुखी, संतुष्ट परिवार था।

एक कहावत है कि आदमी जोड़ता है और भगवान उसके सपने तोड़ता है। शम्भू मुंशीगीरी करने के साथ पढ़ भी रहा था। स्नातक के अन्तिम वर्ष में था। दिल्ली विश्व विद्यालय में पत्राचार पद्धति का छात्र था। उसका सपना था एक स्वतंत्रा प्रसिद्ध वकील बनने का। सपने देखने पर कोई प्रतिबंध नहीं है परन्तु पूरा होना परिस्थितियों, परिश्रम और भाग्य के हाथ में है। एकदिन अपने वरिष्ठ वकील राजन गुप्ता के साथ वह हरिद्धार घूमने गया। वकील राजन गुप्ता स्वयं गाड़ी चला रहा था। शम्भू भी आगे की ही सीट पर बैठा था। सारे दिन वो गंगा नहाए। मन्दिरों तथा होटलों पर खाने के लिए रुके। खाना खा ही रहे थे कि अचानक धमाका हुआ, आग लगी और भगदड़ मच गई। वकील गुप्ता और शम्भू दोनों झुलस गए। और भी चार लोग आग की चपेट में आए थे। सभी को अस्पताल में भर्ती करवाया गया। छह में से केवल दो लोगों को बचाया जा सका। राजन गुप्ता और शम्भूनाथ दोनों को नहीं बचाया जा सका। गाड़ी भी वहीं रह गई। दोनों की मृत्यु की सूचना ही पुलिस ने पहुँचाई।

होनी तो होकर रहे, टालु सकै ना कोय। दुर्घटना का समाचार अखबारों में आया। फिर क्या जाँच हुई भगवान जाने। परन्तु कमला की जिठानी ने कमला पर दोष मढ़ दिया। ये बदकिस्मत है। हमारे शम्भू को खा गई। उसकी सहायता करने की बजाय उसे घर से निकालने पर ज़ोर देती रही। तभी आगरे से समाचार आया कि कमला के पिता भी इस संसार से चल बसे। कमला तुरन्त आगरे के लिए रवाना हो गई। शम्भू के भाई ने कहा- ''मैं तेरहवी पर आऊंगा। तुम जाओ।''

कमला का परिवार उजड़ गया था। भाई-बहन कमला को चाहते थे परन्तु मां के मन में वो बात नहीं थी। तेरहवी का दिन भी आया। सभी कार्य सम्पन्न हुए। भाई सुनील ने विधि-विधान से सब कर्तव्य पूरे किए। कमला के ससुराल से कोई नहीं पहुँचा। एक महीने बाद कमला दिल्ली पहुँची तो जेठानी ने घर में ही घुसने नहीं दिया। कमला ने बहुत अनुनय विनय करी परन्तु पत्थर दिल नहीं पिघला। अब कमला के पीहर में भी पिता नहीं रहे और ससुराल में पति नही रहा। जाए तो कहाँ जाए? वह बे घर लाचार भटकती झण्डेवालां मंदिर पहुँची। माता के दर्शन किये और द्वार के पास ही बैठ गई। एक स्वयंसेवक कार्यकर्ता ने देखा कि भिखारिन तो नहीं लग रही, यहाँ क्यों बैठी है? उसने कमला को अन्दर बुलाकर भोजन कराया और कारण पूछा। वहाँ से ज्वाला जी अग्रवाल निरीक्षिका अपने साथ शाहदरा ले गई। कमला को नन्द नगरी केन्द्र में सिलाई सीखने तथा बाल बाड़ी में शिक्षिका के नाते सेवा में लगा दिया। सिलाई सीखने के पश्चात् सुन्दर नगरी में एक मंदिर में केन्द्र प्रारंभ किया और कमला सिलाई शिक्षिका हो गई। दिलशाद गार्डन में एक कमरा भी किसी तरह ले लिया। बरसों तक सेवा भारती यमुना विवाह विभाग में कमला सेवा करती रही।

एक बार कमला को बुखार चढ़ा और दवाइयाँ प्रभावहीन हो गई। कमला को खोजते हुए आगरे से उसका भतीजा किसी प्रकार शाहदरा पहुँच गया। कमला संभवत: उसे मिलने के लिए ही जीवित थी। उसने आगरे में सब भाई-बहनों का हाल जाना। फिर बोली-मैं जा रही हूँ। सब बाल-बच्चों को मेरा प्यार देना। सेवा भारती ने मेरे जैसे अनेकों को सहारा दिया है। जीवन में पिछड़ों-दुखियों निराश्रितों की सेवा सहायता करना। ओउम् शान्ति।

भतीजे ने कमला का अन्तिम संस्कार किया। वहीं मंदिर परिसर में सेवा भारती की ओर से कमला जी की श्रद्धांजलि सभा की गई। सभी मंदिर समिति और सेवा भारती के कार्यकर्ताओं ने श्रद्धापूर्वक अपने विचार व्यक्त किए। ऐसी थी कमला की किस्मत जो परिश्रम पूर्वक किए गए कर्म से प्रशंसा और पूजा योग्य बन गई। ❐

कृतज्ञता (शुक्रिया)

■ एफ.सी. भाटिया

अंतरराष्ट्रीय बंधुत्व बढ़ाने में कृतज्ञता की भूमिका को ध्यान में रखते हुए संयुक्त राष्ट्र के मेडिटेशन ग्रुप ने प्रतिवर्ष 21 सितम्बर को विश्व कृतज्ञता दिवस मनाना शुरू किया। वास्तव में कृतज्ञता मानव का आभूषण है। यह एक ऐसी प्रेरणा जगाती है जिससे मनुष्य जीवनदाता परमात्मा के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हुआ सृष्टि के कण-कण में उसी की छवि देखता है, सब से स्नेह करता है तथा सब के प्रति श्रद्धावान रहता है। कृतज्ञता के माध्यम से आपसी संबंधों को मधुर एवं संपूर्ण बनाया जा सकता है। आभार का एक शब्द किसी भी प्रार्थना से कम नहीं है। शुक्रिया एक शब्द नहीं वह अहसास है जो जिंदगी के रोमांच को कम नहीं होने देता।

कृतज्ञता का अर्थ है अपने प्रति की दुई श्रेष्ठ और उत्कृष्ट सहायता के लिए श्रद्धावान होकर दूसरे व्यक्ति के समक्ष सम्मान प्रदर्शन करना। कृतज्ञता हमारा कर्म है पर दूसरों से अपने किए के प्रति आभार की इच्छा कर्म की पवित्रता को क्षीण करती है। कृतज्ञता दिव्य प्रकाश है। यह प्रकाश जहां होता है वहां देवता निवास करते हैं। कृतज्ञता आत्मा का सहज गुण है और मानवता की उत्कृष्ट विशेषता है। कृतज्ञता एक झरना है, व्यक्ति के सुसंस्कृत होने का भान कराती है। दी हुई सहायता के प्रति आभार प्रकट करने का श्रद्धा के अर्पण का भाव है। यह विनम्रता का परिचायक है। जीवन का हर पल हमें कृतज्ञ होने का संदेश देता है। धन्यवाद, साधुवाद, शुक्रिया आदि शब्द कृतज्ञता के सूचक है।

बाल्मीकि रामायण में भी इस बात का उल्लेख किया गया है कि परमात्मा ने आपको जो कुछ दिया है उसके लिए उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करो। निबंध कार गार्डनर ने कहा है- धन्यवाद छोटी-छोटी रेजगारी है जिसके द्वारा हम सामाजिक प्राणी होने का मूल्य चुकाते हैं। तुलसीदास ने कृतज्ञता को धर्मरूपी रथ का एक पहिया कहा है। आईन्स्टीन प्रकृति के उपहारों की सराहना करते थे। यहुदियों की धारणा है कि जो कुछ भी हमें मिलता है प्रभु की इनायत है। हमें प्रभु का अहसानमंद रहना चाहिए। इसाइयत का विश्वास है- आभार धर्म का असल रूप व ईश की मौजूदगी को समझने का ज़रिया है। यह एक ऐसा नज़रिया है जिससे हम कृतज्ञता के द्वारा दूसरों से जुड़ने की ललक को पोषित करते हैं। एक रिश्ता बनाते हैं और कृतज्ञता के पाश में बंधते हैं। भ्रातृत्व भावना तथा विश्व बन्धुत्व की भावना जाग्रत होती है। परिवार में समरूपता आती है। समाज में संतुलन व समन्वय की स्थापना होती है। कृतज्ञता से शिष्टता, सकारात्मक विचारों व प्रेम जैसे आदर्श मूल्यों का विकास होता है। दानशीलता उदारता बढ़ाती है, मनुष्य को निरोगता और तनावमुक्त करती है। व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का उज्ज्वल एवं मानवीय पक्ष रखने में एक प्रेरक उदाहरण बन जाता है। इसलिए हमें अपने माता-पिता गुरुओं, साहित्यकारों, शहीदों, प्रकृति, वैज्ञानिकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

अकृत्ज्ञ व्यक्ति को न तो परिवार ही चाहता है और न समाज में उसका आदर होता है। कृतघ्नता एक चोर वृति है। यह एक आसुरी भावना है जो इंसान को इंसानियत से जुदा करती है। कृतघन कभी संतुष्ट और सुखी नहीं हो सकता। कृतघ्नता मानवीय समाज को पतन की ओर ले जाती हैं जबकि इंसासन की सारी क्षमताएं दाता की देन है। इसलिए उसका शुक्रिया अदा करना तो हमारा फर्ज है। जो शुक्रगुजार होगा, वही आशावादी होगा दाता हमें आध्यात्मिक उपहार तथा शक्ति देंगे जिससे हम इस संसार में असाधारण कार्य कर सकते हैं। हमें दैनिक रूप से कृतज्ञता का लेखा-जोखा रखना चाहिए।

जब प्रभु श्रीराम ने अहिल्या को अपने चरणों से पुनः नारी बना दिया तो अहिल्या भाव विह्वल हो जाती है। उनकी स्तुति करने लगती है। यह स्तुति श्रीराम जी के प्रति अहिल्या का कृतज्ञता ज्ञापन ही था। हनुमान की निस्वार्थ सेवा के लिए प्रभु श्रीराम कृतज्ञता प्रकट करते हैं। विभीषण का प्रभु श्रीराम को धन्यवाद देते हैं। यही श्रेष्ठ कृतज्ञता ज्ञापन है।

आपसी कटुता एवं मनमुटाव दूर करने में कृतज्ञता की भूमिका प्रशंसनीय है। विश्व बंधुत्व का उपाय है कृतज्ञता। ❐

83 वर्ष के उत्साही कार्यकर्ता

आज हम आप सबका परिचय एक ऐसे स्वयंसेवक से कराने जा रहे हैं, जिनकी उम्र 83 साल है पर किसी भी कार्य को करने का जज्बा आज भी किसी युवक से कम नहीं है। हमारा विभाग यमुना विहार विभाग ऐसे वरिष्ठ कार्यकर्ताओं की पूंजी है और हम सब धन्य हैं, जो ऐसे प्रभावशाली स्वयंसेवक का मार्गदर्शन हमें समय-समय पर मिलता रहता है।

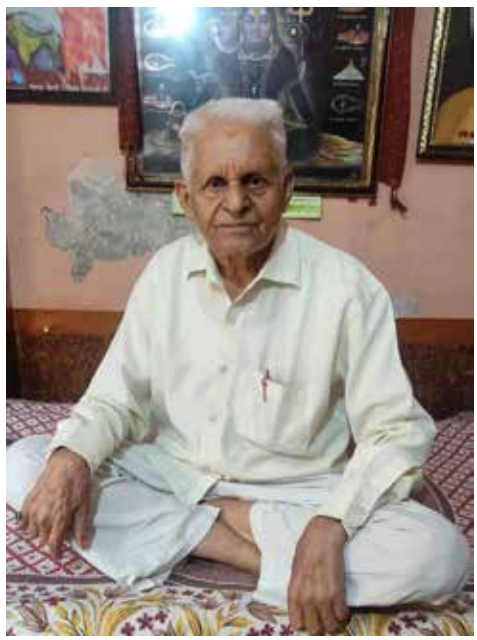

श्री राजेन्द्रपाल शर्मा जी का जन्म 12 मार्च, 1939 को पंजाब के नारोवाल शहर, जो आज पाकिस्तान में है, में हुआ था। पिता दुर्गादास शर्मा जी भी स्वयंसेवक थे। वे पटवारी के नाते काम करते थे। विभाजन के बाद पहले वे अमृतसर पहुंचे फिर हरियाणा में रह कर पढ़ाई की। मैट्रिक अमृतसर से ही 1955 में कर लिया था, फिर हरियाणा से दो साल का मैकेनिकल डिप्लोमा पास किया। 1965 को मकर संक्रान्ति (14 जनवरी) को परिवार सहित शाहदरा आये, बड़े भाई आर्मी में डाक विभाग में थे। श्री राजेन्द्र जी नियमित स्वयंसेवक हैं। जिला कार्यवाह अविनाश जी तथा जिला संघचालक सत्यनारायण जी एवं विभाग कार्यवाह भगवान दास जी की प्रेरणा से संघ शिक्षा प्रथम वर्ष 2005 में, द्वितीय वर्ष 2006 में तथा नागपुर में तृतीय वर्ष 2007 में शिक्षण लिया। इस शिक्षण के पश्चात् सेवा भारती में तथा संघ के विभिन्न दायित्व संभाले। संघ के वर्गो में श्री राजेन्द्र जी 11 बार प्रबंधक रहे। नगर कोषाध्यक्ष, गीत गायक, जिला मंत्री, विभाग सह मंत्री, विभाग उपाध्यक्ष आदि दायित्व निभाते हुए निरन्तर सेवा कार्य में लगे हुए हैं।

उन्होंने प्रेम कुमार जी, अजय कुमार जी, ज्ञान प्रकाश जी, वीना महतो जी, संरक्षक श्री मायाराम जी तथा युधिष्ठिर जी से सेवा कार्य करने की रीति-नीति सीखी। जैसे कार्यकर्ताओं की सम्भाल और निर्माण, शिक्षिका और निरीक्षिकाओं से बहनों और बेटियों सा प्यार और व्यवहार, बस्ती में सम्पर्क करना, दानदाताओं से दान प्राप्त करना और उनसे सम्पर्क बनाये रखना, ये सभी कार्य सेवा भारती की नींव हैं। इसके अलावा श्री राजेन्द्र जी के विशेष गुण जो हम सभी ने देखे हैं वे कोई भी उत्सव हो उसका प्रबंध कौशल तथा धन संग्रह एवं उचित व्यय में पारदर्शिता, देखने और सीखने योग्य है। ऐसे वरिष्ठ कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन हम सबको समय-समय पर मिलता रहे, यही ईश्वर से प्रार्थना है।

– प्रतिभा भटनागर (यमुना विहार विभाग)

- **हर कोई अपने दु:ख को बड़ा मानता है, दुनिया का यही फायदा है।**

  – विमल मित्र

- **जो नहीं बोलता उसकी भी लोग निन्दा करते हैं और जो बहुत बोलता है उसे भी दोष लगाते हैं। इसी तरह मितभाषी की भी लोग निन्दा करते हैं। संसार में ऐसा कोई नहीं जिसकी लोग निन्दा न करें। बिलकुल ही प्रशंसित पुरुष न कभी हुआ, न कभी होगा और न आजकल है।**

  – अज्ञात

अभिनंदन कार्यक्रम

ब्रह्मपुरी जिला सेवा भारती द्वारा माता जीवनी बाई सेवा केंद्र पर दिनांक 1 अगस्त, 2022 को अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें अनेक कार्यकर्ताओं का अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रांत उपाध्यक्ष श्रीमान संजय गर्ग जी ने की और श्रीमान राकेश जी समर्थ भारत, श्रीमान शैलेन्द्र जी प्रांत मंत्री सेवा भारती, श्रीमान निर्भय कुमार जी समर्थ भारत प्रांत मंत्री एवं यमुना विहार सेवा भारती विभाग पालक जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। सेवा भारती एवं समर्थ भारत द्वारा संचालित प्रकल्पों के माध्यम से क्षेत्र के हिंदू जन स्वावलंबी बन देश की प्रगति में योगदान करें, यह विषय बहुत सरल एवं प्रभावशाली ढंग से प्रतिपादित किया गया। श्रीमान देवराज सिंह जी, प्रो. देवराज एसी सर्विस द्वारा आत्मकथन में बताया कि वह अच्छे वेतन की नौकरी छोड़ कर अपना काम कर रहे हैं और वेतन से अधिक धनार्जन कर रहे हैं। अपने साथ कई कार्यकर्ता भी प्रशिक्षित कर रहे हैं। केंद्र पर सप्ताह में एक दिन नि:शुल्क प्रैक्टिकल शिक्षण देने के लिए भी उपस्थित रहेंगे।

कार्यक्रम में 15 कार्यकर्ताओं का श्रीमद्भागवत गीता एवं तुलसी पौधे से अभिनंदन किया गया। इसी दिन से एसी, रेफ्रिजरेटर आदि की मरम्मत के लिए प्रशिक्षण भी शुरू हुआ। श्रीमान संजय जी ने अध्यक्षीय आशीर्वचन में सभी से यथायोग्य सेवा कार्य में सहयोग करने का आग्रह किया। कार्यक्रम में विभाग अध्यक्ष श्रीमान अशोक बंसल जी, जिला संरक्षक श्रीमान भगवती जी, जिला अध्यक्ष श्रीमान जगदीश कश्यप जी, रमा उपाध्याय महिला समिति की जिलाध्यक्षा जी की गरिमामय उपस्थिति रही। बहन रमा उपाध्याय जी ने बहुत ही सुचारू रूप से मंच संचालन किया। जलपान उपरांत कार्यक्रम संपन्न हुआ।

सेवा बस्ती दर्शन

सेवा भारती, तिलक जिले में 'दौलत राम कॉलेज,' दिल्ली विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) इकाई के सहयोग कार्यकर्ताओं ने 17 अगस्त, 2022 को मादीपुर में एक बस्ती यात्रा का आयोजन किया। इस यात्रा में सेवा बस्ती के बच्चों के लिए स्टेशनरी सामग्री और कार्यशाला सत्र को शामिल किया गया, जिसमें हमारे देश की आजादी के संघर्ष के बारे में जागरूकता बढ़ाने से सम्बन्धित जानकारी को साझा किया गया। मादीपुर केन्द्र पालक श्री मनोहर लाल जी, कार्यकर्ता डॉ. स्मिता यादव जी और श्रीमती इन्दिरा शर्मा सहित कई कार्यकर्ताओं ने उत्साहपूर्वक यात्रा में भाग लिया।

मुखर्जी नगर जिले में कार्यक्रम

मुखर्जी नगर जिले में विभिन्न केन्द्रों में जैसे कि लालबाग, बाला साहब देवरस सेवा केन्द्र, मुन्शी राम कालोनी, भामाशाह केन्द्र में रक्षाबन्धन, स्वतंत्रता दिवस एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टी हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। साथ ही चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई। केन्द्र में पढ़ने वाले नन्हें-नन्हें बच्चों ने राधा-कृष्ण रूप में सज-धज कर सबका मन मोह लिया।

केशव पुरम विभाग में विभिन्न कार्यक्रम

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी : गत 19 अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर जनक जिले की सेवा बस्तियों के बच्चों द्वारा श्री सनातन धर्म कत्याल मंदिर, अशोक नगर में कार्यक्रम किए गए। शिक्षिका बहनों ने सेवा बस्तियों के बच्चों को अलग-अलग रूपों में सजाकर झांकियां लगाई। राम दरबार, राधा कृष्ण झूले में, माखन चोर, राजा कंस और कारागार में देवकी-वसुदेव की झांकियां बहुत अच्छी रहीं। विभाग और नगर के कार्यकर्ता इस कार्यक्रम में उपस्थित हुए। बच्चों का मनोबल बढ़ाने के लिए कुछ कार्यकर्ता तो अपने पूरे परिवार के साथ आए। श्रीमती जनक सेठी जी, श्रीमती सुषमा साहनी जी, श्रीमती उमा जी, श्रीमती प्रमिला भाटिया जी कार्यक्रम के समापन तक हमारे साथ रहीं। इस कार्यक्रम को उमा बहन जी ने बड़े सुंदर ढंग से संभाला कार्यक्रम बहुत सुंदर था।

स्वतंत्रता दिवस : जनक जिला केशव पुरम विभाग में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। पांच अलग-अलग स्थानों पर बच्चों ने देशभक्ति कार्यक्रम किए। छोटे बच्चों ने कविता और देशभक्ति गीत सुनाएं। उसके पश्चात् कार्यकर्ता बहनें एवं शिक्षिका बहनों ने बस्ती के लोगों के साथ मिलकर तिरंगा यात्रा निकाली और बस्ती के हर घर में तिरंगा हो ऐसी कोशिश की। बस्ती में लोगों के घरों में अपने हाथ से भी तिरंगे लगाए। पूरे जिले का माहौल देशभक्ति के उमंग से भर गया। जिला कार्यालय के कार्यक्रम में प्रांत से शैलेंद्र जी एवं विभाग से श्याम गुप्ता जी उपस्थित थे। ❐

पूर्वी विभाग की गतिविधियां

तीज उत्सव : गांधी नगर जिले के 'हेडगेवार भवन' केन्द्र में तीज उत्सव उत्साहपूर्वक मनाया गया। उत्सव की शुरुआत बहनों को मेंहदी लगाने से की गई। सभी कार्यकर्ताओं और शिक्षिकाओं, बच्चों, विद्यार्थियों की कुछ खेल-प्रतियोगिता रही। साथ में सहभोज का कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। तीज उत्सव में सभी ने झूला-झूलने का आनन्द समीप के मन्दिर में झूला-झुलकर और सावन के गीत गाकर उठाया। सभी हर्षोल्लास से भरभूर दिखे। विभाग मंत्री ने उपस्थित होकर उत्साहवर्धन किया।

नेत्र जाँच शिविर : मयूर विहार सेवा भारती जिले और लायंस क्लब के सहयोग से नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। इसमें लगभग 140 लोगों ने जांच का लाभ उठाया और चश्मे प्राप्त किए। इस नेत्र जांच शिविर में जिन कार्यकर्ताओं की गरिमामयी उपस्थिति रही उनमें से विभाग से राजश्री दीदी जी, मयूर विहार जिले के अध्यक्ष शारदा प्रसाद भारती, मंत्री श्री तरुण राय जी, उपाध्यक्ष श्री श्रीराम जी, मयूर विहार जिले के सेवा प्रमुख श्री सुरेन्द्र शर्मा जी, निरीक्षिका सुनीता मौर्या जी, शिक्षकों में सोनम, सोनाली, पूजा और मीना जी और साईं मन्दिर ट्रस्टी श्री केशतो दादा और सोनू गुप्ता जी उपस्थित रहे।

रक्षा बन्धन : पूर्वी विभाग के सभी जिलों के केन्द्रों पर रक्षाबंधन पर्व मनाया गया। केन्द्रों पर बनाई गई राखियां बांधकर बच्चों ने व बहन कार्यकर्ताओं ने बन्धुओं को राखी अथवा रक्षा सूत्र बाधा। उन्होंने बच्चों को उपहार दिये। एसएचओ और जवान भाई, बहनों को थाने में जाकर कार्यकर्ताओं ने रक्षा सूत्र बांधे। तिलक लगाकर उनका मुंह मीठा भी कराया। सेवा बस्तियों में भी रक्षा बन्धन का त्योहार मनाया गया।

अमृत महोत्सव : सेवा भारती पूर्वी विभाग में आजादी के अमृत महोत्सव की शुरुआत गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों के परिचय और उन पर चित्रकला प्रतियोगिता से की गई । 6,7 और 8 अगस्त को सभी जिलों में आयोजन किया गया। अनेक विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह के साथ इसमें अपने भावों की अभिव्यक्ति की। 10 से 18 की आयु के प्रतियोगियों ने भाग लिया। प्रथम, द्वितीय और तृतीय को पुरस्कार दिए गए और अन्य को सांत्वना पुरस्कार भी दिए गए। विभाग और जिले के सभी कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम को पूरे मनोयोग से सफल बनाया। चुने हुए विजेताओं को दिल्ली प्रान्त

में होने वाली प्रतियोगिता में भेजा जाएगा। 'टीन्स फार सेवा' और बस्ती के बच्चों ने मिलकर चिन्हित स्थान पर तिरंगा यात्रा और प्रभात फेरी निकाली।

पूर्वी विभाग ने हर घर तिरंगा अभियान को सफलतापूर्वक पूर्ण किया। पहले केन्द्रों पर ध्वजा रोहण किया गया। माननीय आगन्तुकों का उद्‌बोधन हुआ। उसके पश्चात तिरंगा यात्रा निकाली गई। जिसमें विभाग कार्यकारिणी, जिला समितियां, शिक्षिकाएं, निरीक्षिकाएं, भजन मण्डली की बहनें, बस्ती प्रमुख एवं प्रकल्पों के विद्यार्थी हाथों में तिरंगा लिये निकले।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी : पूर्वी विभाग के सभी जिलों के केन्द्रों पर बाल कृष्ण के आगमन पर श्रद्धा और भक्तिपूर्वक कृष्ण राधा रानी के स्वरूप सजाकर झांकियां सजाई गईं। भजन-कीर्तन करते हुए शोभायात्रा निकाली गई। अति आनन्द की अनुभूति हुई। सभी कार्यकर्ताओं, बन्धुओं और भगिनियों, विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह और उमंग के साथ इस आयोजन को सफल बनाने हेतु अपना योगदान दिया।

स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रकल्प में कार्यक्रम

स्वतंत्रता दिवस : सेवा भारती द्वारा संचालित 'स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट' में दिनांक 13 अगस्त 2022 को स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का शुभारम्भ ध्वजारोहण के साथ हुआ। स्थानीय निगम पार्षद श्री संजय गोयल जी द्वारा ध्वजारोहण एवं भारत माता पूजन किया गया। समारोह में प्रकल्प की कार्यकारिणी के सदस्य भी सम्मिलित हुए। सेवा बस्ती के गणमान्य व्यक्तियों ने भी ध्वजारोहण में भाग लिया। ध्वजा रोहण के उपरांत सांस्कृतिक कार्यक्रम के रूप में केन्द्र की बालिकाओं द्वारा सामूहिक नृत्य प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का समापन वन्दे मातरम के साथ हुआ। कार्यक्रम के बाद उपस्थित लोगों को प्रसाद वितरण किया गया।

रक्षाबन्धन : कलंदर कालोनी स्थित स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट में दिनांक 9 अगस्त 2022 को रक्षाबंधन उत्सव मनाया गया। कार्यक्रम में केन्द्र में शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्र-छात्राओं तथा बस्ती के गणमान्य लोगों ने सहर्ष भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातः 10 बजे सामूहिक गीत से हुआ। जिसके बाद प्रकल्प संरक्षक श्री मदन लाल खन्ना जी का उदबोधन हुआ। तत्पश्चात केन्द्र की शिक्षिकाओं ने उपस्थित गणमान्य लोगों को रक्षासूत्र बांधकर कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। उसके बाद केन्द्र में पढ़ने वाली बालिकाओं ने बालकों को रक्षा सूत्र बांधा। उदोपरान्त उपस्थित सभी लोगों को घेवर की मिठाई के साथ उल्पाहार दिया गया। हर्षोल्लास के साथ रक्षाबंधन का यह पावन पर्व मनाया गया।

हरियाली तीज : कलंदर कालोनी स्थित सेवा भारती के केशव सेवा केन्द्र, स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट में दिनांक 30 जुलाई दिन शनिवार को हरियाली तीज उत्सव मनाया गया। कार्यक्रम में बस्ती की लगभग 110 बहनों ने सहर्ष भाग लिया। कार्यक्रम में बस्ती की भजन मंडली की टोली भी शामिल हुई। कार्यक्रम का शुभारम्भ दोपहर 1 बजे से भगवद भजन के साथ किया गया। तत्पश्चात अन्य भजनों और कीर्तनों का सामूहिक गायन हुआ।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी : कलंदर कालोनी स्थित केशव सेवा केन्द्र स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रकल्प में दिनांक 18 अगस्त 2022 (वीरवार) को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव को बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। इस वर्ष यह कार्यक्रम केन्द्र में पहली बार मनाया गया। पूजन हेतु केन्द्र में कार्यरत कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहा। कम्पयूटर, कोचिंग तथा सिलाई एवं कढ़ाई कक्षा के बच्चों ने भी सहयोग दिया। बस्ती की तीनों भजन मंडलियों का भी सहयोग रहा। कार्यक्रम में बस्ती के लगभग 200 लोगों ने भाग लिया। भगवान का जन्मोत्सव मनाया। कार्यक्रम का शुभारंभ दोपहर 1 बजे से दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। उसके बाद भजन मंडली द्वारा भजन का कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम का समापन भगवान श्री कृष्ण जी की आरती के साथ हुआ। पूजन के पश्चात् सभी भक्तजनों को प्रसाद आदि का वितरण किया गया।

कश्मीर की रानी कोटा रानी की अमर कथा

■ प्रतिनिधि

कश्मीर को बचाने के लिए कोटा रानी ने अपने जीवन को उत्सर्ग कर दिया। सन 1301 में कश्मीर में सहदेव नामक शासक ने गद्दी संभाली। उनके दो विश्वासपात्र थे, लद्दाख से खदेड़े गए बौद्ध राजकुमार रिनचिन और स्वात घाटी से आया मुस्लिम प्रचारक शाहमीर। कोटा रानी सहदेव के सेनापति रामचंद्र की बेटी थीं। सन् 1319 में 70 हजार सैनिकों के साथ तातार सेनापति डुलचु ने कश्मीर पर धावा बोला तो सहदेव को भाई उदयन देव के साथ किश्तवाड़ भागना पड़ा। डुलचू ने हजारों कश्मीरियों को गुलाम बनाकर तातार भेजा। पर कुछ माह बाद वह एक हिमस्खन में साथियों संग मारा गया। उसकी मौत के बाद किश्तवाड़ के राजाओं ने कश्मीर को हस्तगत करना चाहा, लेकिन रामचंद्र ने उन्हें पराजित कर खुद को कश्मीर का राजा घोषित कर दिया। पर रिनचिन ने शाहमीर के साथ मिलकर विद्रोह कर रामचंद्र का धोखे से कत्ल कर दिया।

यही वह समय है जब कोटा रानी के जीवन में नया मोड़ आया। कश्मीर में अपनी संस्कृति और हिंदू शासन कायम रखने के लिए उसने पिता के हत्यारे रिनचिन से विवाह रचा लिया। कुछ इतिहासकारों का मत है कि यह प्रस्ताव भी कोटा रानी ने दिया था। विवाह के बाद धीरे-धीरे उसने रिनचिन को भारतीय धर्म और संस्कृति का इतना प्रेमी बना दिया कि वह हिंदू धर्म स्वीकार करने की योजना बनाने लगा। कुछ इतिहासकारों के अनुसार उसकी इच्छा को तत्कालीन हिंदू समुदाय के एक वर्ग द्वारा नकारने से दु:खी होकर उसने इस्लाम कबूल कर लिया और अपना नाम मलिक सदरुद्दीन रख लिया। वह कश्मीर का पहला मुस्लिम शासक हुआ। कोटा रानी की कहानी उसके बाद भी कई मोड़ लेती रही पर है वह हर बार अपनी संस्कृति को आगे रखती रही। इसी बीच सहदेव के भाई उदयन देव ने फिर कश्मीर पर हमला बोला लेकिन हार झेलनी पड़ी। हमले में रिनचिन गंभीर रूप से घायल हो गया और 1326 में उसकी मौत हो गई। उसकी मौत के बाद उसका छोटा बेटा हैदर गद्दी पर बैठा, लेकिन राजकाज की बागडोर कोटा रानी के हाथ में ही थी। इतिहासकार बताते हैं कि कश्मीर की सुरक्षा व अपनी संस्कृति को बनाए रखने की ललक के चलते कोटा रानी ने उदयन देव के साथ विवाह कर उसे कश्मीर सौंप दिया।

तातार सेनाओं को खदेड़ दिया रानी ने

शासन की बागडोर फिर कोटा रानी के हाथ में ही रही। कोटा रानी के दो विश्वासपात्र थे-एक भिक्षण देव और दूसरा शाह मीर। भिक्षण देव रानी कोटा का भाई था। कश्मीर में हालात सामान्य होते इससे पूर्व तातार सेनाओं ने फिर हमला कर दिया। उदयन देव मुकाबला करने के बजाय कश्मीर और रानी को छोड़ तिब्बत भाग गया। कोटा रानी ने मोर्चा संभाला और उसने अपने सैनिकों को जमा कर उन्हें युद्ध के लिए तैयार किया। उसने अपने भाई भिक्षण भट्ट और शाहमीर की मदद से दुश्मन सेना को खदेड़ दिया। उसकी देशभक्ति की अपील ने स्थानीय नागरिकों पर असर किया और वह भी युद्ध का हिस्सा बन गए। संकट टलने के बाद उदयन देव वापस आया और उसने शाहमीर और उसके बेटों को महत्वपूर्ण पद दिए। इस प्रकार कश्मीर पर हिंदू शासन बनाए रखने में रानी सफल रही।

शाह मीर ने रची साजिश

सन् 1341 में उदयन देव की मृत्यु हो गई। उस समय कोटा रानी और उदयन देव का बेटा छोटा था, अत: रानी ने एक बार फिर से राजकाज संभाला। मगर शाहमीर सत्ता को हस्तगत करने का षड्यंत्र रचने लगा था। उसने पहले तो भिक्षण भट्ट को अपनी साजिश में शामिल करने के लिए लालच दिया, जब वह नहीं माना तो उसकी धोखे से हत्या करा दी। फिर उसने कोटा रानी के खिलाफ विद्रोह कर उसे पराजित किया। इस प्रकार कश्मीर पर इस्लाम का शासन काबिज हुआ।

स्वयं दे दी अपनी जान

कहा जाता है कि शाहमीर ने कोटा रानी को निकाह का प्रस्ताव दिया था, और उसे निकाह के लिए विवश भी कर दिया। जब वह रात में उसकी प्रतीक्षा कर रहा था, तो उसके सामने पूरे श्रृंगार में आई रानी ने अपने पेट में खंजर घोंपकर आत्महत्या कर ली थी, और उसके आखिरी शब्द थे, यह है मेरा उत्तर! यानी कोटा रानी ने प्राण दे दिये लेकिन निकाह नहीं किया। ❐

किसान

- आचार्य मायाराम पतंग

अटल सत्य है गांवों में ही बसता असली हिन्दुस्तान।
मेहनत करने वाले तन में रहती है भारत की जान।।
सुबह सवेरे नींद त्याग कर जाता खेत और खलिहान।
मिट्टी में खुद को खो देता मेहनत ही जिसका ईमान।।
खेतों में हल चला चलाकर सब प्रश्नों का करे निदान।
अन्न और सब्जी फल देता वंदनीयसन्मित्र किसान।।
धरती का सच्चा सपूत है सीधापन, श्रम है पहचान।
इसको जानो इसको मानो, करो सदा इसका सम्मान।।

BANSAL WIRE INDUSTRIES LTD.

BANSAL

Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires
(Black and Galvonised)

Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires
(Black and Galvonised)

H.B. HHB & G.I. WIRES

Bansal Wire Industries Ltd.
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651890-91-92-93
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

पश्चिमी विभाग में विभिन्न कार्यक्रम

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 13 अगस्त, 2022 को सेवा भारती उत्तम जिला, पश्चिमी विभाग द्वारा शिवानी केन्द्र से तिरंगा यात्रा बड़े ही हर्षोल्लासपूर्वक निकाला गया। इस कार्यक्रम में सेवा भारती के कार्यकर्ताओं के साथ सिद्धी फाउण्डेशन के स्वयंसेवक केन्द्र की शिक्षिकाओं तथा बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। यह यात्रा लगभग 3.5 किमी लम्बी रही। यात्रा के मार्ग में आने वाले घरों पर तिरंगा लगाया गया। सिद्धी फाउण्डेशन द्वारा घरों पर स्टिकर लगाए गए और बच्चों को छोटे झंडे भी दिए गए। बीच-बीच में स्वतंत्रता आन्दोलन की जानकारी दी गई। भारत माता की जय और वंदे मातरम् के जय घोष में बस्ती के लोगों का भी सहयोग रहा। सेवा भारती और सिद्धी फाउण्डेशन का सम्मिलित प्रयास काफी सफल रहा। इसके अतिरिक्त शिव विहार व बिन्दापुर सेवा बस्ती में भी कार्यक्रम उत्तम प्रकार से सम्पन्न हुआ। 15 अगस्त, 2022 को शिवानी केन्द्र पंखा रोड उत्तम नगर पर सेवा भारती उत्तम जिले की ओर से ध्वजारोहण कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिला अध्यक्ष श्री रविन्द्र जैन, मंत्री श्रीमती रामेश्वरी जी, पूर्व अध्यक्ष श्री राजीव बतरा जी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। श्री राजेन्द्र तिवारी जी ने स्वतंत्रता दिवस पर अपने विचार रखे। उन्होंने बताया कि किस प्रकार अपने वीर जवान देश की स्वतंत्रता हेतु अविरल लगे रहे। हंसते-हंसते फांसी के फंदे पर झूल गए और भारत माता को अंग्रेजों की दास्ता से मुक्त कराया। आज उन वीरों को याद करने का दिन है और उनसे प्रेरणा लेकर देश की सुरक्षा हेतु संकल्प लेने का दिन है। अंत में अध्यक्ष जी ने सबका धन्यवाद किया और प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

रक्षा बन्धन के अवसर पर 10 अगस्त, 2022 को शिवानी केन्द्र पंखा रोड उत्तम नगर में सेवा भारती उत्तम जिले का रक्षा बन्धन उत्सव बड़े ही हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम में जिले के कार्यकर्ताओं के साथ महिला समिति की बहनों, शिक्षिकाओं और सिलाई, कम्प्यूटर व सौन्दर्य कक्षाओं के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। ब्रह्मकुमारीज की बहनों द्वारा रक्षा बंधन के विभिन्न आयामों पर मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। राजेन्द्र तिवारी जी ने सेवा भारती का परिचय दिया और त्यौहारों द्वारा संस्कारों को विकसित करने का महत्व बताया। श्रीमती रमा गुप्ता जी ने सबको रक्षा बंधन की शुभकामनाएं देते हुए धन्यवाद किया। अंत में कल्याण मंत्र के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/1983
पोस्टिंग तिथि 6-7 सितम्बर, 2022, प्रकाशन तिथि-5 सितम्बर 2022
Posted at - LPC, DELHI RMS, DELHI-110006

डाक रजिस्टर्ड नं. U(C)-166/2022-24
DL(ND)-11/6188/2022-23-24
अग्रिम शुल्क के बिना प्रेषण

दक्षिण विभाग में स्वतंत्रता दिवस

सेवा भारती जिला कालकाजी के मालवीय नगर विजय कैंप एवं ट्रांजिस्ट कैंप में भी स्वतंत्रता दिवस के कार्यक्रम को स्थानीय नागरिकों ने हम सेवा भारती के कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर पूरे जोश के साथ मनाया। प्रथम श्रीमान मिथिलेश जी एवं अन्य वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने दीप प्रज्वलन किया। द्वितीय ट्रांजिस्ट कैंप मैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दिल्ली प्रांत से सेवा प्रमु श्रीमान मिथिलेश जी, विभाग मंत्री श्रीमान इंद्रनील जी, विभाग संगठन मंत्री श्रीमान पन्नालाल जी आदि ने जिले के कार्यकर्ताओं के साथ ध्वजारोहण किया, तत्पश्चात् राष्ट्रीय गान हुआ। बच्चों ने देशभक्ति के गीतों पर रंगारंग एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। श्रीमान मिथिलेश जी, श्रीमान पन्नालाल जी ने उत्साहवर्धक वक्तव्य सबके समक्ष रा। सभी कार्यकर्ताओं एवं कैंप के स्थानीय नागरिकों, बच्चों एवं महिलाओं के साथ मिलकर शानदार तिरंगा यात्रा निकाली गई जिसका समापन वापस कार्यक्रम स्थल पर आकर हुआ। 'कुछ मीठा कुछ नमकीन' वाला प्रसाद वितरण भी हुआ। छोटे-छोटे और बड़े बच्चों का उत्साह देते ही बनता था जिसे देकर हम वरिष्ठ जनों में भी देशभक्ति की उर्जा का पुन: संचरण हुआ। कार्यक्रम में श्रीमती वर्षा जी, श्रीमती राजकुमारी जी, पुत्री प्रियंका, भाई रिंके पुत्र विपिन कुमार, राहुल कुमार, मोहित कुमार, भाई करतार सिंह और बहुत सारे बच्चों का योगदान रहा। सभी को विशेष धन्यवाद!

यमुना विहार विभाग में कार्यक्रम

जुलाई के अंत से अगस्त महीने में सेवा भारती युमना विहार विभाग के कार्यकर्ताओं के द्वारा कई संकल्प पूरे किये गये जैसे कांवड़ सेवा में से योगदान, हरियाली तीज पर रंगा-रंग और मेंहदी का कार्यक्रम बस्ती की बहनों के साथ, रक्षा बंधन के शुभ पर्व पर पुलिस थाने में जाकर पुलिसकर्मियों को रक्षासूत्र बांधना और मिठाई खिलाना और फिर 15 अगस्त पर प्रत्येक केन्द्र और बस्ती में बस्ती के कार्यकर्ताओं के द्वारा ध्वजारोहण एवं मुख्य केन्द्र पर सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ विभाग प्रचारक श्री श्रवण जी के द्वारा ध्वजारोहण किया गया। फिर प्रसाद वितरण हुआ और हर सेवा बस्ती में ध्वज यात्रा भी निकाली गयी। उसके बाद जन्माष्टमी का आयोजन बड़े उत्साहपूर्वक किया गया प्रत्येक कार्यकर्ता ने अपना कार्य जिम्मेदारी से निभाया ।

- प्रतिभा भटनागर

मुद्रक/संपादक/प्रकाशक: इन्दिरा मोहन द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।